ज्ञानामृत

अगस्त, 1985 वर्ष 21 ❋ अंक 2 मूल्य 1.50

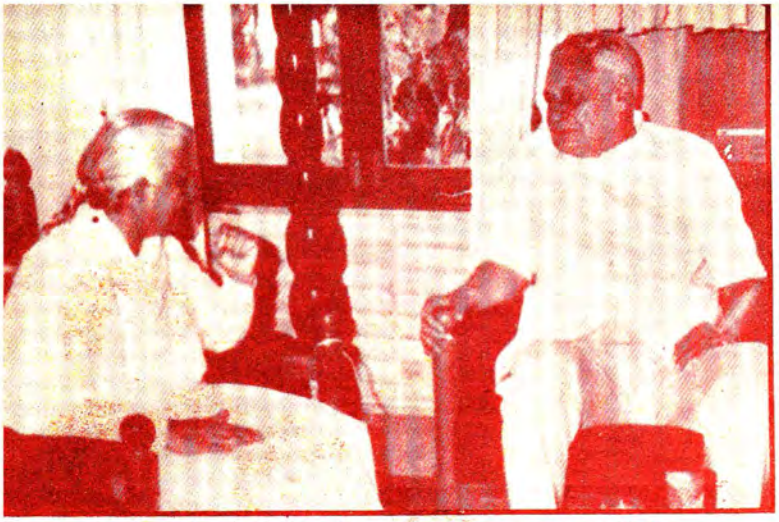

ब्र०कु० दादी प्रकाशमणि जी, गुजरात के राज्यपाल भ्राता बी.के नेहरू जी को गांधी नगर में ईश्वरीय सन्देश देते हुए तथा उन्हें भारत के कोने-कोने से निकाली जा रही भारत एकता युवा पद यात्राओं से अवगत कराते हुए।

भारत के गृह मन्त्री भ्राता एस.बी. चव्हान के वारंगल आने पर ब्र०कु. शान्ता उन्हें ईश्वरीय सौगात देते हुए

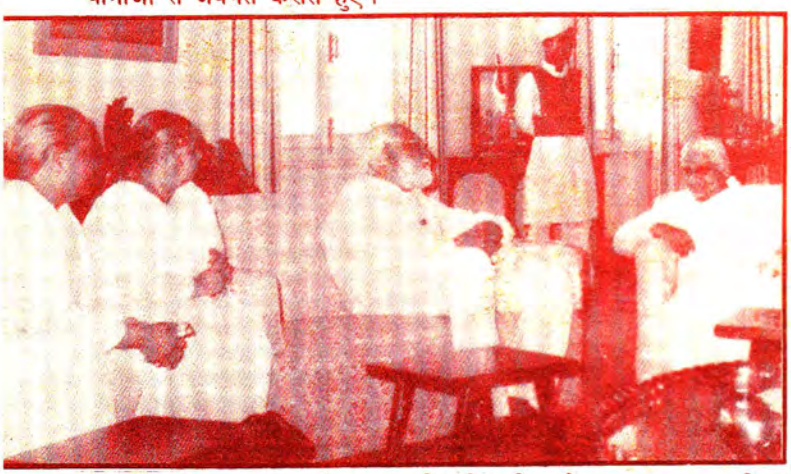

भुवनेश्वर में ब्र०कु० दादी प्रकाशमणि जी उड़ीसा के राज्यपाल भ्राता बी.एन. पांडे को 'भारत एकता युवा पद यात्रा' के लक्ष्य बताते हुए।

हिन्दुपुर में आन्ध्र प्र० के मुख्यमन्त्री भ्राता एन.टी. रामाराव को ब्र०कु० शान्ता तथा अम्बिका कन्याकुमारी से चल रही 'भारत एकता युवा पद यात्रा' के विषय में अवगत कराते हुए।

राजस्थान के राज्यपाल भ्राता ओ.पी.मेहरा जी के पांण्डव भवन, आबू पर्वत पर पधारने पर दादी प्रकाशमणि जी उन्हें ईश्वरीय सौगात देते हुए।

साऊथ दिल्ली संग्रहालय में ब्र०कु० शान्ति जी भ्राता अहमद पटेल, संसदीय सचिव को चित्रों पर समझाते हुए।

पुरी-कलकत्ता-दिल्ली 'भारत एकता युवा पद यात्रा' का एक दृश्य।

भुवनेश्वरी पीठ (गुजरात) से पधारे हुए आचार्य घनश्याम जी न्यूज़ीलैंड के वेलिंगटन सेवा केन्द्र पर पधारे। साथ में ब्र०कु० भावना विराजमान हैं।

सोलापुर में ब्र०कु० सोमप्रभा महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री भ्राता शिवाजी राव पाटिल निलंगेकर को श्रीकृष्ण का चित्र भेंट करती हुई।

पटियाला में ब्र०कु० जगदीश चन्द्र जी के पधारने पर विशिष्ट व्यक्तियों का स्नेह मिलन तथा पत्रकार सम्मेलन रखा गया। चित्र में भ्राता जगदीश जी विशिष्ट व्यक्तियों तथा पत्रकारों के मध्य उपस्थित हैं।

हरियाणा के मन्त्री (लोकल सेलफ गवर्नमैंट) भ्राता ओ.पी. महाजन **जी, पाण्डव भवन, आबू पर्वत पर पधारे, उनका स्वागत करते हुए पाण्डव भवन निवासी**

Regd No. 10563/65·D(E)·70

भुवनेश्वर मे हुए 'युवा उत्थान सम्मेलन' का भ्राता बी.एन. पांडे, राज्यपाल उड़ीसा उद्घाटन करते हुए।

गांधी नगर में नवनिर्मित आध्यात्मिक संग्रहालय का उद्घाटन दादी प्रकाशमणि जी तथा गुजरात राज्य के मन्त्री भ्राता विजयदास महंत जी कर रहे हैं।

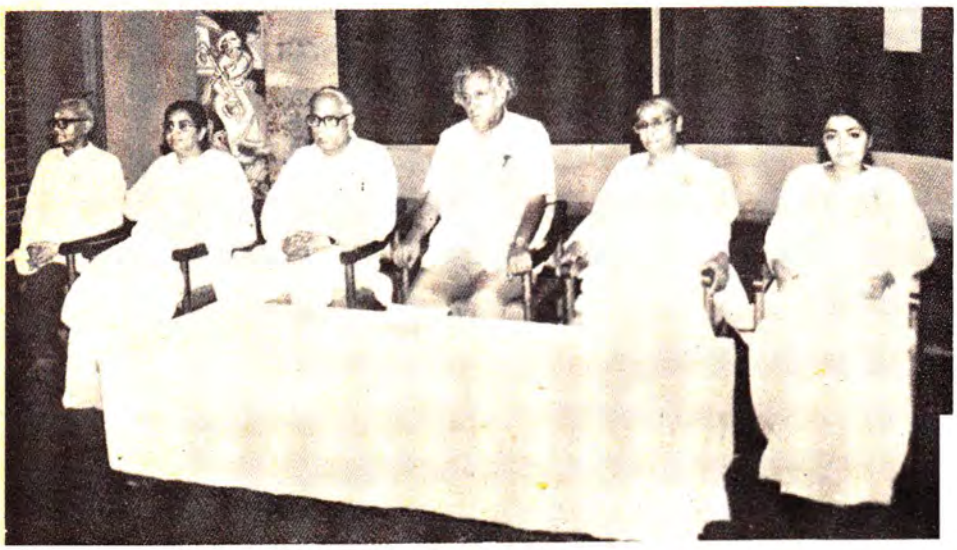

दिल्ली विश्वविद्यालय के गांधी भवन में आयोजित एक पदयात्रा के फलैग आफ समारोह में मंच पर उपस्थित हैं (बाए से), डा० पंत आनरेरी सेक्रेटरी गांधी भवन ब्र०कु० चक्रधारी, ब्र०कु० जगदीश चन्द्र प्रो. मुनीस रज़ा, उप-कुलपति दिल्ली विश्व विद्यालय, ब्र०कु० रुकमणी तथा सुधा

कन्याकुमारी से चली हुई भारत एकता युवा यात्रा के मुदराई पहुंचने पर स्वागत दृश्य।

अमृत-सूची

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ	क्रम सं०	विषय	पृष्ठ
१.	राजयोग शिविर से सुन्दर अनुभूतियां	१	८.	अनोखी राखी	१३
२.	हमारी पढ़ाई का पाँचवा विषय—सहयोग (सम्पादकीय)	२	९.	प्रतिज्ञा (कविता)	१८
३.	ईश्वरीय मार्ग सहज या कठिन	५	१०.	लक्ष्य और हमारा लक्ष्य	१९
४.	काम से जी चुराना अच्छा नहीं (कहानी)	७	११.	युवा पग यात्रियों प्रति (कविता)	२०
५.	सचित्र सेवा समाचार	८	१२.	परमानन्द की सुखद घड़ियां	२१
६.	युवा जागो···क्रान्ति से शान्ति की ओर चलो	९	१३.	मनसा सेवा	२३
७.	कुछ नया (कविता)	१२	१४.	रक्षा बन्धन	२५
			१५.	सचित्र समाचार	२७
			१६.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	२९

राजयोग शिविर से सुन्दर अनुभूतियां

माउण्ट आबू—ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय राजयोग भवन तथा ज्ञान विज्ञान भवन में मई जून मास में १६ राजयोग शिविरों का आयोजन किया गया। इस दो मास के शिविरों द्वारा विभिन्न वर्ग के १०६० प्रतिष्ठित भाई बहिनों ने लाभ लिया तथा अपने जीवन की अनेक बुराईयाँ—शराब, सिग्रेट, क्रोध आदि को भी छोड़ा। इन शिविरों के दौरान विशेष एक शिविर डाक्टर भाई बहिनों के लिए भी रखा गया था जिसमें बताया गया कि राजयोग का अभ्यास मानसिक तथा शारीरिक रोगों को दूर करने में किस तरह से मदद करता है। इस शिविर में भारत के भिन्न-भिन्न स्थानों से १०० डाक्टर्स भाई बहिनों ने भाग लिया। इसके अलावा जज, वकील, लेक्चरार, प्रिंसिपल, स्कूल टीचर्स, एम० एल० ए०, उद्योगपति, पत्रकार, लेखक, रेडियो आर्टिस्ट, कमिश्नर, सेल्स टैक्स आफीसर्स, केन्द्रीय तथा राज्य अधिकारी, मेडिकल आफीसर्स, बैंक आफीसर्स, इन्जीनियर्स, व्यापारी वर्ग, युवा नेतायें, विद्यार्थियों आदि-आदि ने विशेष तौर पर इन शिविरों में भाग लिया। राजयोग द्वारा सभी ने बहुत सुन्दर अनुभव किये, जिसमें से कुछेक अनुभव निम्नलिखित हैं—

भ्राता एस० एस० चौधरी, सिविल जज, अहमद नगर (महाराष्ट्र)—आत्मानुभूति तथा परमात्मानुभूति कराने के क्षेत्र में यह संस्था अद्वितीय है। राजयोग के विद्यार्थियों के लिए किये गये प्रबन्धों से मैं प्रभावित हुआ हूँ तथा धन्यवादी हूँ।

भ्राता ओमप्रकाश अग्रवाल, हापुड़ के पोस्ट ग्रेजुएट कालेज में अंग्रेजी के प्रोफेसर—राजयोग शिविर में मुझे अनूठा अनुभव हुआ। यहाँ का शान्तिमय एवं सरस वातावरण, यहाँ पर दी जा रही आध्यात्मिक शिक्षा की सरल एवं समर्पित भाव से परिपूर्ण विधि को योगदान देता रहता है। विनाश के कगार पर बठे विश्व की मानव आत्माओं के बचाव का यही एकमात्र साधन है जिस द्वारा आत्मा पुनः अपनी अनादि सम्पन्न स्थिति को प्राप्त कर सकती है। यहाँ के भाई बहिनों की समर्पणमयता एवं अनुशासन प्रशंसनीय है।

भ्राता के० जी० करनवार, टाइम्स आफ इण्डिया, बाम्बे के सहसम्पादक—मैंने मनोविज्ञान में स्नात्तकोत्तर परीक्षा पास कर मैटासाइकलोजी में अन्वेशण प्रारम्भ किया तथा इस संस्था के विधि

(शेष पष्ठ ३२ पर)

हमारी पढ़ाई का पाँचवा विषय–सहयोग

इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय में चार विषयों (Subjects) का अध्ययन और अभ्यास तथा आचरण कराया जाता है—ऐसा हम मानते हैं और दूसरों को बताते भी हैं। ये चार विषय हैं—(1) ईश्वरीय ज्ञान, (2) सहज राजयोग (3) दिव्य गुणों की धारणा और (4) ईश्वरीय सेवा। परन्तु मेरा अनुभव यह कहता है कि इनके अतिरिक्त दो विषय और भी हैं। वे हैं—**सहयोग** और **मर्यादा-पालन**। कहा जा सकता है कि ये दो अलग विषय नहीं हैं बल्कि ये तो दो दिव्य गुण हैं। यह भी कहा जा सकता है कि सहयोग तो सेवा में सम्मिलित है और मर्यादा-पालन दिव्य गुणों में आ जाता है। परन्तु मेरे विचार में यह उत्तर केवल अंशतः ही ठीक है; यह सम्पूर्ण सन्तोषजनक नहीं है।

जैसे 'दिव्य गुणों की धारणा' योग का एक स्तम्भ और ज्ञान का लक्ष्य होने पर भी अलग विषय है, वैसे ही 'सहयोग' भी अलग विषय है

आप देखेंगे कि यूँ तो दिव्य गुण भी योगी जीवन ही का एक भाग है। क्या हम यह नहीं मानते और बताते कि योग के 4 स्तम्भों में से दिव्य गुण भी एक स्तम्भ है ? तब फिर हम 'दिव्य गुणों की धारणा' को एक अलग विषय क्यों मानते हैं ? हम उसे योग के अन्तर्गत ही क्यों नहीं परिगणित कर लेते ? इसी प्रकार, वास्तव में हम तो 'ज्ञानवान' भी उसी को मानते हैं जो जीवन को पवित्र बनाता है और दिव्य गुणों को धारण करता है। दिव्य गुणों की धारणा के बिना जो आत्मा, परमात्मा या सृष्टि के विषय में केवल सिद्धान्तों ही की चर्चा करता है, उसे तो हम "कुक्कड़ ज्ञानी", "कोरा पण्डित", "केवल वाचक" ही मानते हैं। अतः दिव्य गुणों का विषय तो ज्ञान में भी समाया हुआ है, परन्तु फिर भी हम उसे एक अलग विषय मानते हैं। ज्ञान का अध्ययन करते समय हमें यह बताया जाता है कि हम आत्मा हैं और कि आत्मा वास्तव में शान्त स्वरूप और पवित्र है और कि जब हम इस सृष्टि में पहले-पहले आये तो हम पवित्र और दिव्य गुण-युक्त थे और अब हमें वैसा ही बनना चाहिए। इस प्रकार, पवित्रता और दिव्य गुणों की ज्ञान के अन्तर्गत चर्चा होती है, उन पर बल भी दिया जाता है और उनकी धारणा ही को ज्ञान का लक्ष्य बताया जाता है, वर्ना ज्ञान का प्रयोजन और फल ही क्या है ? यह सब होने के बावजूद भी हम दिव्य गुणों को ज्ञान से भी एक अलग विषय मानकर चलते हैं।

इसको अलग मानने का एक कारण यह है कि हम दिव्य गुणों का विस्तारपूर्वक अध्ययन और अभ्यास करना चाहते हैं और जीवन संग्राम में दिव्य गुणों की धारणा में जो कठिनाइयाँ और बाधाएँ उपस्थित होती हैं, उनको हम कैसे पार करें—यह भी हम जानना चाहते हैं। पुनश्च, हम इस दिव्य गुण रूपी विषय को काफ़ी महत्त्व देना चाहते हैं। इन सब कारणों के अतिरिक्त हम यह भी देखते हैं कि कुछ बहनें और भाई भले ही ज्ञान को सविस्तार नहीं जानते तो भी उनमें दिव्य गुण विशेष रूप से झलकते हैं। ऐसा भी देखा गया है कि कुछ लोग वृद्ध अथवा शारीरिक रूप से दुर्बल होने के कारण अधिक ईश्वरीय सेवा नहीं कर पाते परन्तु उनके जीवन में पवित्रता, प्रेम, नम्रता, त्याग इत्यादि दिव्य गुणों की सुगन्धि होती है। अतः यह मानना पड़ता है कि वे इस पहलू में दूसरों से आगे हैं और उन्हें इसके अधिक अंक (marks) मिलेंगे। इस दृष्टिकोण से भी 'दिव्य गुणों की धारणा' को एक अलग विषय मानना पड़ता है।

इसी प्रकार **'सहयोग'** भी एक अलग ही विषय है। यों भी कह सकते हैं कि इस विषय में चारों विषयों का थोड़ा-बहुत समन्वय है। यदि किसी में

सहयोग की भावना अथवा कार्यान्विति नहीं है तो आप देखेंगे कि उसमें ज्ञान, योग और दिव्य गुणों की धारणा का भी तो किसी हद तक अभाव है और वह सेवा की बजाय भी सेवा-हानि (dis-service) का कारण बन जाता है। मान लीजिए, कोई एक व्यक्ति दूसरे को आवश्यकता के समय में सहयोग नहीं देता। कई बार इसका कारण यह भी होता है कि सहयोग न देने वाला व्यक्ति न तो अति व्यस्त होता है और न किसी परिस्थिति से मजबूर बल्कि वह ईर्ष्या या द्वेष के कारण अथवा स्वार्थ और मन-मुटाव ही के कारण सहयोग नहीं देता। स्पष्ट है कि उसका यह व्यवहार 'दिव्य गुणों की धारणा' के विपरीत है। यह 'योग' के भी विपरीत है क्योंकि जो योग लगाता है, वह तो हरेक को आत्मिक नाते से अपना भाई देखते हुए उसका भला चाहता है और किसी भी अच्छे कार्य में अपना योगदान देने में खुशी अनुभव करता है; अतः जो सहयोग नहीं देता उसका योग भी कम ही होगा। सहयोग न देना 'ज्ञान' के भी विपरीत है क्योंकि ज्ञान रूपी विषय के अध्ययन से हम यह जानते हैं कि मत-भेद, भाषा-भेद, जाति-भेद देश-भेद तथा विकारों ने एक मनुष्य और दूसरे मनुष्य में झगड़ा-फसाद, ईर्ष्या-द्वेष, शोषण और तनाव को पैदा करके मनुष्य को दुःखी कर दिया है। इस विधि से ज्ञान तो परमात्मा से भी नाता फिर से जोड़ने और परस्पर भाई-चारे, प्रेम, मेल-मिलाप, सहानुभूति तथा सहयोग से चलने की प्रेरणा देता है। यदि सहयोग नहीं है तो भाईचारा भी नहीं है। यदि भाईचारा नहीं है तो यह विश्व एक परिवार है और हम सब एक परमपिता परमात्मा की सन्तान हैं—यह 'ज्ञान' भी नहीं है। अतः सहयोग का अभाव ज्ञान की प्रेक्टीकल धारणा के अभाव को प्रदर्शित करता है और उस व्यक्ति को 'तथाकथित ज्ञानी' अथवा 'वाचक ज्ञानी' सिद्ध करता है। इसके अतिरिक्त यह तो हम पहले ही कह आये हैं कि सहयोग न देना ईर्ष्या, द्वेष, मनोविकार आदि का सूचक है। अतः सहयोग का अभाव व्यक्ति में मानसिक पवित्रता और दिव्य गुणों के अभाव का द्योतक है। जिसमें ईर्ष्या और द्वेष है, उसमें सूक्ष्म रूप में क्रोध, घृणा, कड़वापन, अपने नाम और शान की इच्छा, अपनी महिमा का लोभ, अपने ही से मोह इत्यादि विकृतियाँ हैं। जिसमें यह सब हों, उसका ठीक रीति 'योग' भी नहीं लग सकता क्योंकि ये सब वृत्तियाँ और स्मृतियाँ ईश्वरीय स्मृति में बाधक हैं। फिर, असहयोग (Non-Cooperation) से जो अनबन दिखाई देती है, जो सेवा के ऊँचे स्तर में कमी पड़ जाती है और संकल्पों की सूक्ष्म टक्कर से जो बाधायें उपस्थित होती हैं, वह भी सेवा को खण्डित और त्रुटिपूर्ण कर देती हैं। जिनकी सेवा की जाती है या जो और सहयोगी होते हैं उन्हें भी उस व्यक्ति के असहयोग का और अनबन का पता तो चल ही जाता है। और यह पता ऐसा है जो धीरे-धीरे कईयों का पत्ता ही काट देता है क्योंकि बुरा सुनने और देखने से वे स्वयं भाव-स्वभाव, मन-मुटाव, अपने-पराये, भेद-भाव इत्यादि कुसंस्कारों व कुसंकल्पों के भँवर में अथवा माया की दलदल में फँसते जाते हैं। इसके अतिरिक्त सहयोग न देने वाला व्यक्ति यहाँ-वहाँ, इधर-उधर, किसी के पूछने पर या स्वयं ही अपने मन को हल्का करने के लिए सहयोग न देने का कारण भी स्पष्ट करता फिरता है ताकि लोग कहीं यह न मानने लगें कि ये इसलिए सहयोग नहीं देता कि इसकी धारणा और अवस्था ठीक नहीं। इस प्रकार अपनी सफाई पेश करने के लिए जो चर्चा वह करता है, वह भी आध्यात्मिक जगत के वातावरण को दूषित करती, जहर फैलाती, दो दिलों के बीच में नफ़रत पैदा करती, ग़लतफ़हमी पैदा करती और संघर्ष को बढ़ाती है। इस प्रकार वह गुरु (सद्गुरु) की निन्दा, संस्था की निन्दा, परिवार (ब्राह्मण परिवार) की निन्दा कराने के निमित्त बनता है। इस प्रकार सहयोग का विषय भी विस्तारपूर्वक समझाया जाने वाला विषय है।

हम यह भी देखते हैं कि कुछ लोग ज्ञान भी अधिक नहीं लेते अथवा ज्ञान में उनकी पूरी आस्था

नहीं, योग का भी वे विशेष अभ्यास नहीं करते, दिव्य गुणों को वे अच्छा तो मानते हैं परन्तु फिर भी वे सांसारिक लोग हैं। किन्तु वे लोग ईश्वरीय सेवा में सहयोग देते हैं। अन्य लोगों को ज्ञान और योग की महिमा बताकर उनके कल्याण के निमित्त बनते हैं। संस्था के कार्य के प्रति भावना होने के कारण हमारे कार्यक्रमों में शामिल हो जाते हैं तब क्या उन्हें सहयोग के अंक (marks) नहीं मिलेंगे ? यदि मिलेंगे तो यह भी एक विषय है। जैसे कुछ लोग आत्मा और परमात्मा के ज्ञान की खोज में हमारे यहाँ आते हैं और फिर योग तथा अन्य विषय भी सीख लेते हैं; अन्य कुछ योग सीखने आते हैं, ज्ञान में रुचि न लेने पर भी धीरे-धीरे ज्ञान तो उनकी बुद्धि में बैठता ही जाता है; या कुछ लोग दिव्यता से प्रभावित होकर जीवन को अच्छा बनाने आते हैं और फिर ज्ञान योग भी सीख लेते हैं। इसी प्रकार, कुछ लोग सहयोगी बनते-बनते योगी भी बन जाते हैं और ज्ञानी भी।

मेरा यह भाव नहीं है कि हम सारा समय सहयोग में बिता दें और कुछ स्थाई काय के निमित्त न बनें। यों तो यदि सबको सहयोग देते जायें और हमारा कोई स्थाई काय-विभाग न भी हो तब तो हम रमता योगी और आज़ाद पंछी होंगे और उसमें भी हमें कोई हानि नहीं बल्कि इसमें कुछ लाभ ही है कि हमारा किसी स्थान, व्यक्ति इत्यादि से लगाव नहीं रहेगा। परन्तु फिर भी यदि हम किसी स्थाई कार्य-विभाग के उत्तरदायित्व को लेना चाहते हैं तो इसमें भी कोई विशेष आपत्ति नहीं परन्तु योगी को सहयोगी तो होना ही चाहिए। क्योंकि बात अपने या पराये कार्य की नहीं बल्कि कार्य सब शिव बाबा का है। और यदि हम किसी को सहयोग नहीं देते तो मानो कि शिव बाबा को सहयोग नहीं देते। और यदि हम कार्य को इस प्रकार देखते हैं कि यह कार्य मेरा है और फलाँ कार्य दूसरे किसी का है तो इसका अर्थ यह हुआ कि कार्य बाबा का नहीं। इस तरह से तो मेरे और तेरे का भाव आ जाता है जो कि बीच में दीवारें(Partition) खड़ा करने वाला भाव है। यह भाव योगी के योग्य नहीं।

इस कहने का यह अर्थ नहीं कि जिस कार्य का हमने उत्तरदायित्व लिया है, उस पर हम पूरा ध्यान ही न दें और वह कार्य रहता है तो रह जाये और हम हरेक को सहयोग ही देते रहें—यह भी ठीक नहीं। हम अपने ज़िम्मे लगा हुआ कार्य भी करें और पूरा ध्यान देकर तथा खूबी से करें परन्तु दूसरे को यदि हमारी सहायता की ज़रूरत है तो हम यथा-समर्थ सहयोग अवश्य दें और अपने ज़िम्मे लगे कार्य को ऐसा पुनर्व्यवस्थित कर लें कि जिससे दूसरे को सहयोग मिल जाए।

सहयोग का विषय एक विस्तृत विषय है। हम संक्षिप्त लेख में इसके सभी पहलुओं पर प्रकाश नहीं डाल सकते परन्तु इतना ज़रूर कहते हैं कि इस विषय के भी बहुत अंक (marks) हैं। यदि कोई सेवा तो करता है और दूसरों को सहयोग नहीं देता तो उसको कम अंक (marks) मिलते हैं। वह दैवी परिवार को संगठित करने में सहायक नहीं होता। वह सबको पारिवारिक भासना दिलाने का निमित्त नहीं बनता बल्कि वह कई बार लून-पानी का-सा खारापन सम्बन्धों में पैदा कर देता है जिससे उसके अंक कट भी जाते हैं।

अन्त में मैं यह कहना चाहता हूँ कि यदि सहयोग को एक अलग विषय माना जाए तो उससे परस्पर मिलाप, त्याग, स्नेह आदि बढ़ेगा। और संसार में हृदय की संकीर्णता, ईर्ष्या, द्वेष, मेरे-तेरे का भाव, परस्पर संघर्ष कम होंगे। ऐसे ही मर्यादा का विषय भी एक अलग विषय है जिसकी पहले हमने एक-दो बार चर्चा की भी है। फिर कभी इसकी विस्तृत चर्चा करेंगे। यदि किसी तर्क से ये दोनों अलग विषय न भी हों तो भी इन दोनों को अलग विषय मानने से इन पर विशेष ध्यान देने के फल-स्वरूप अपनी उन्नति और ईश्वरीय विश्वविद्यालय की प्रगति निश्चित है।

—जगदीश

ईश्वरीय मार्ग सहज है या कठिन

ले.—ब्रह्माकुमारी सुधा, शक्ति नगर दिल्ली

ईश्वरीय सेवा के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के अनुभव होते रहते हैं । ऐसा ही एक अनुभव आज मैं आपके समक्ष रख रही हूँ ।

कुछ ही दिन हुए, किन्हीं व्यक्तियों को ईश्वरीय ज्ञान सुनाते वक्त एक प्रश्न उठा कि ईश्वरीय मार्ग सहज है या कठिन ? शिव बाबा तो प्रतिदिन वाणियों में कहा करते हैं कि मैं सहज ईश्वरीय ज्ञान व सहज राजयोग की शिक्षा देने के लिए आया हूँ । यह इतना सहज है कि इसे बच्चा, बूढ़ा, जवान, बीमार, अनपढ़, पढ़ालिखा, स्त्री पुरुष-सब समझ सकते हैं और अपने जीवन में अपनाकर मुक्ति और जीवन्मुक्ति की प्राप्ति कर सकते हैं । तभी तो गायन है कि भगवान ने अहिल्या, गणिका, कुबजा और अजामिल जैसों का भी उद्धार कर दिया ।परन्तु जब यह प्रश्न उन व्यक्तियों से पूछा गया तो उन्होंने बताया कि सर्व प्रथम तो अमृतवेले 4.00 बजे उठना और वह भी सर्दी, गर्मी, वर्षा, आँधी, तूफान, सभी में, बहुत कठिन है । दूसरे, जैसे कि खान-पान की पूर्ण शुद्धि का नियम, यह अपनाना भी कठिन ही लगता है क्योंकि कभी-न-कभी, कहीं-न-कहीं तो कुछ खाना पड़ ही जाता है और फिर सारी जिन्दगी रोज़ सुबह शाम क्लास करना, यह भी बड़ा मुश्किल है । कभी तो छुट्टी भी होनी चाहिए । इस प्रकार उन्होंने कई समस्याएँ सुना दीं । अब प्रश्न यह उठता है कि क्या यह वास्तविकता है? और अगर सचमुच यह कठिन मार्ग है तो इस मुश्किल को सहज कैसे किया जाए ?

कहावत है कि हाथ कंगन को आरसी क्या ? बात तो ठीक है कि ईश्वरीय मार्ग में इन नियमों का अपनाना अत्यावश्यक है । परन्तु अगर यह कठिन है तो मैं पूछती हूँ कि दुनिया में कौन सा काम करना मुश्किल नहीं, क्या आसान है ? मान लीजिए, अपने लौकिक जीवन में कोई व्यापारी है । क्या व्यापार करना आसान है? व्यापार करने के लिए दिन रात कितनी मेहनत करनी पड़ती है । कितना संघर्ष (Struggle) करना पड़ता है क्योंकि आज के इस विश्व में हर व्यक्ति एक-दूसरे से आगे जाना चाहता है? कितनी जबरदस्त होड़ (Competition) है । उस कम्पीटीशन में आगे जाने के लिए क्या नहीं करना पड़ता । रातों की नींद, दिन का चैन सब उड़ जाता है । क्या यह मुश्किल नहीं?

इसी प्रकार कोई व्यापारी नहीं तो नौकरी करता है । क्या नौकरी मिलना और फिर एक बॉस (Boss) के नीचे काम करना आसान है? कितना सुनना पड़ता है, सहना भी पड़ता है, कहीं झुकना पड़ता है, कहीं दबना पड़ता है । सर्दी हो या कड़कती गर्मी, वर्षा हो या तूफान, उसे तो नौकरी करने अपनी डियूटी (Duty) पर जाना ही होगा । क्या यह मुश्किल नहीं ?

चलिए, गृहस्थी का ही उदाहरण ले लीजिए । क्या गृहस्थी चलाना आसान है । माँ बाप को बच्चों की जिन्दगी बनाने के लिए कितनी दौड़-धूप करनी पड़ती है । उनके लिए कमाना, पकाना, खिलाना, पढ़ना, क्या नहीं करना पड़ता उसके लिए? कल तक जो कन्या थी, अथवा कुमार था, जो एक स्वतन्त्र जीवन जी रहे थे, आज गृहस्थी बनते ही कितनी ज़िम्मेवारियाँ निभानी पड़ती हैं । क्या यह कठिन नहीं ?

कोई भी कार्य कठिन नहीं, यह तो सोचने का तरीका है ।

इस प्रकार संसार के किसी क्षेत्र में से आप कोई भी उदाहरण ले लीजिए । आज कोई भी काम आसान नहीं है लेकिन जब व्यापारी अथवा नौकरी करने वाला एक व्यक्ति अपना लक्ष्य (goal) दृढ़ कर लेता है, सोच लेता है कि मुझे यह करना ही है क्योंकि इसके बगैर जिन्दगी नहीं चल सकती । जीने के लिए मुझे खाना पड़ेगा खाने के लिए मुझे कमाना ही पड़ेगा । कमाने के लिए मेहनत भी करनी ही होगी—ऐसे विचार उस मुश्किल को सहज कर देते हैं । जब एक कन्या सोच लेती है कि यही ज़िन्दगी है । ज़िन्दगी का यही तरीका है तो उसे शादी होने के बाद अपने परिवार को पालना कठिन नहीं लगता । उसे त्याग त्याग नहीं लगता, सहन करना सहन करना नहीं लगता क्योंकि उनके जीवन का लक्ष्य मज़बूत है । वे उस अनुसार अपने को ढाल लेते हैं । क्योंकि जैसा लक्ष्य होता है, वैसे ही लक्षण आते हैं ।

ठीक इसी तरह अगर हम अपना लक्ष्य पक्का कर लेते हैं कि मुझे नर से नारायण पद अथवा नारी से लक्ष्मी पद अवश्य ही पाना है, मुझे मुक्ति का अधिकार अवश्य ही लेना है, मुझे योगी जीवन बनाकर अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करना ही है, मुझे ईश्वरीय आनन्द का रसास्वादन करना ही है, तो हमें यह ईश्वरीय मार्ग को अपनाना कठिन नहीं लगेगा । उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हम उन लक्षणों को धारण करने का जी-जान से पुरुषार्थ करेंगे ।

दूसरी बात यह है कि जैसे शारीरिक रूप से कोई व्यक्ति अगर कमज़ोर होता है तो उसे छोटा-सा कार्य करना भी मुश्किल लगता है लेकिन अगर वह शक्तिशाली हो तो उसे बड़े-से-बड़ा कार्य भी चुटकी का खेल लगता है । वह पहाड़ को भी राई समझता है । इसी प्रकार आत्मिक रूप से भी यदि कोई निर्बल है तो उसे ईश्वरीय मार्ग पर चलना कठिन लगता है और यदि आत्मा शक्तिशाली है तो इन मर्यादाओं को अपनाना अति सहज लगता है । अति सहज तो क्या उसे तो लगता है कि यही तो जीवन है ! अत: अब प्रश्न उठता है कि निर्बल आत्मा को बलवान कैसे बनायें ?

आत्मिक स्वास्थ्य के लिए कुछ धारणायें

जैसे शरीर को तंदरुस्त बनाने के लिए 6 बातों का ध्यान रखा जाता है । वे 6 बातें हैं— (1) प्रात: कोई ताकत की चीज़ का सेवन करना (2) नित्य ताजा भोजन (3) समय पर भोजन ग्रहण करना (4) कोई भी मौसम का फल (5) सैर करना और (6) ठीक से विश्राम करना । यदि इन 6 बातों में से किसी में भी अलबेलापन आया तो शरीर स्वस्थ नहीं रह सकता । इसी प्रकार आत्मा को भी स्वस्थ (Healthy) बनाने के लिए इन छ: बातों पर अवश्य ही ध्यान देना होगा । हो सकता है, प्रारम्भ में कुछ कठिनाई महसूस हो लेकिन इसका लाभ जब आप अनुभव करेंगे, तो इन्हें अपनाना कठिन नहीं लगेगा । ये जीवन का अंग हो जायेंगी । अब हम एक-एक बात को स्पष्ट कर लेते हैं:

1. प्रात: किसी ताकत की चीज़ का सेवन करना— अमृतवेला अथवा प्रात:काल सारे दिन की नींव है । अगर उस वक्त कोई शक्ति वर्द्धक वस्तु का सेवन करता है, तो सारा दिन वह शक्ति काम आती है । इसी प्रकार बाबा कहते हैं कि मैं भी बच्चों को अमृतवेले माजून खिलाता हूँ । उस शान्ति के वातावरण में जब बच्चे मुझसे मन बुद्धि का नाता जोड़ते हैं तो आत्मा स्वयं को बहुत शक्तिशाली महसूस करती है । अत: अमृतवेले प्रेम-विभोर होकर उस प्रियतम की याद में बैठना ही प्रात: काल ताकत देने वाली चीज़ का सेवन करना है ।

2. नित्य ताज़ा भोजन— प्रतिदिन परमपिता परमात्मा द्वारा उच्चारित महावाक्यों को सुनना अथवा पढ़ना ही ताज़ा भोजन है । यह नहीं कि आज हमने वाणी नहीं सुनी, क्लास नहीं की, कल दो वाणियाँ सुन लेंगे । क्योंकि ऐसा तो जीवन में कभी नहीं होता कि आज मैंने भोजन नहीं खाया, कल दुगना खा लेंगे । वह भोजन हज़म नहीं होगा । इसी प्रकार हमें कोई सिर्फ नियम पूरा नहीं करना है परन्तु ज्ञान को आत्मा की खुराक समझ कर नित्य ग्रहण करना है ।

3. समय पर भोजन— नित्य ताज़े भोजन को समयानुसार लेना भी अति आवश्यक है । असमय भोजन का सेवन शरीर के लिए उतना लाभदायक सिद्ध नहीं होता । इसी प्रकार जो शिव बाबा ने क्लास का समय निर्धारित किया है, उस समय ही उस ज्ञान भोजन को लेना अति आवश्यक है । हाँ, अगर कोई किन्हीं परिस्थितियों के कारण प्रात: क्लास में नहीं आ पाता तो अपने निवास स्थान पर ही प्रात: समय शिव बाबा की ज्ञान-मुरली का अवश्य अध्ययन करें । ऐसा नहीं कि सारा दिन तो कुछ खाया नहीं, इकट्ठा रात को ही खा लेंगे अर्थात् सारा दिन तो ज्ञान बुद्धि में रहा नहीं, रात को सोने से पूर्व वाणी पढ़ लेंगे । अगर केवल रात को पढ़ेंगे तो उसका मनन चिन्तन कब करेंगे । अत: ज्ञान-भोजन का समय भी निर्धारित हो ।

4. मौसम का कोई भी फल— आत्मा को शक्तिशाली बनाने के लिए सेवा रूपी फल खाने की भी ज़रूरत है । महंगा फल न सही, सस्ता ही सही अर्थात् किसी दिन ज्यादा वचन या कर्म की सेवा नहीं कर सकते तो थोड़ी ही सही । ज्ञान सुनाने का समय नहीं है तो मनसा सेवा ही सही जो चलते, फिरते कर्म करते भी हो सकती है ।

5. सैर करना— यह भी सभी मानते हैं कि यदि कोई अच्छे से अच्छा भोजन खाये, समय पर खाये, परन्तु कभी सैर (walking) न करे, खाये और बैठ जाए तो भी कई रोग उसके शरीर को पकड़ लेते हैं । इसी प्रकार आत्मा ने ताज़ा भोजन तो खाया, समय पर भी खाया, सेवा रूपी फल भी ग्रहण किया परन्तु बुद्धि में स्वदर्शनचक्र घुमाना रूपी अथवा ज्ञान का मंथन मनन करने रूपी सैर नहीं की तो वह भोज़न हज़म नहीं होगा अर्थात् आत्मा को ताकत नहीं देगा । अत: स्वदर्शनचक्रधारी बनना ही सैर करना है ।

6. विश्राम— शारीरिक स्वास्थ्य के लिए सही विश्राम (Proper Rest) भी अति आवश्यक हैं । विश्राम के बाद शरीर में कार्य करने की क्षमता व स्फूर्ति आ जाती है । तो आत्मा के लिए विश्राम है—5 बार ट्रैफिक कन्ट्रोल (Traffic Control) के गीत पर सब कर्मों से निवृत होकर बाबा की याद में बैठना । इससे आत्मा के संकल्प जब एक प्रभु पर एकाग्र होते हैं तो आत्मा अपने में शक्ति महसूस करती है ।

अनुभव यही कहता है कि कुछ समय 1 वर्ष, 6 मास, अपने

(शेष पृष्ठ २० पर)

कहानी

काम से जी चुराना अच्छा नहीं

ले. ब्रहमा कुमारी चक्रधारी

बचपन में हमने एक कहानी पढ़ी थी जो आज हम आपको सुनाते हैं ।

एक गाँव में रामू और श्यामू नामक दो बालक रहते थे जो सारा दिन निठल्ले रहा करते थे । वे कुछ भी नहीं करते थे । खाते-पीते और कभी इधर कभी उधर बैठ कर अपना समय व्यर्थ गवाते रहते थे । सारा गाँव उनसे परेशान था । गाँव-वासी रोज उन्हें कहा करते—"अरे, तुम दोनों इतने बड़े-बड़े हो गये हो और कुछ काम ही नहीं करते हो । बैठे-बैठे खाते रहते हो, क्या तुम्हें लज्जा नहीं आती ? उठो, कुछ काम करो, कमाओ और अपने माता-पिता का कुछ हाथ बंटाओ ।" दूसरा बोल उठता—"तुम लोग अधिक कुछ नहीं कर सकते तो कम-से-कम अपने शरीर निर्वाह के लिये तो साधन जुटाओ । आप तो गाँव वालों के लिये बोझ ही बन गए हो ।" इस प्रकार वे जहाँ बैठते उन्हें कोई-न-कोई आकर ताना अवश्य ही मार देता ।

दिन गुजरते जा रहे थे । रोज़-रोज़ अनेकों के ताने सुनकर वे बहुत तंग आ चुके थे । उन्होंने एक दिन आपस में यह फैसला किया कि गाँव से बाहर जो मेला लगा हुआ है, उसमें जा कर हम भी अपनी दुकान लगाऐगें और कुछ-न-कुछ कमा कर अवश्य लाऐगें । आख़िर भी कब तक हरेक की बातें सुनेंगें ?

ऐसा सोच कर उन्होंने अपने-अपने माँ बाप को जा कर कहा कि हमें कुछ चीज ले दो जिसे हम मेले में जा कर बेच आऐं । दोनों के माता-पिता ने मन से परमात्मा का शुक्रिया अदा किया और सोचा चलो, इनकी कुछ तो बुद्धि खुली । और फिर खुशी-खुशी उन्होंने दोनों को एक को समोसे की टोकरी और दूसरे को लड्डू की टोकरी बनावा कर दे दी और कहा—"जाओ मेले में जाकर अपनी दुकान लगाओ ।"

रामू और श्यामू सवेरे-सवेरे अपनी-अपनी टोकरी उठाऐ मेले की ओर चल दिये । रामू ने अपने सिर पर समोसे की टोकरी रखी थी और श्यामू ने लड्डुओं की । दोनों समोसे और लड्डुओं की सुगन्ध लेते धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे । कुछ ही दूर चलने पर रामू को भूख लग आई । उसके पास एक चवन्नी (25 पैसे) थी । रामू को भूख को शान्त करने की एक बहुत सुन्दर युक्ति सूझी । उसने श्यामू को कहा कि तुम एक लड्डू कितने का बेचोगे ? उत्तर दिया—"चार आने का" (25 पैसे का) श्यामू बोला मैं तुम्हारी पहली-पहली बोहनी करा देता हूँ और यह लो चवन्नी मुझे एक लड्डू दे दो ।" श्यामू ने इस पहली बोहनी की चवन्नी खुशी-खुशी स्वीकार कर टोकरी तथा माथे के साथ लगाए अपनी जेब में डाल ली और रामू को एक लड्डू दे दिया । रामू ने चवन्नी का लड्डू बड़े प्यार से खाया तथा दोनों आगे बढ़ने लगे अभी कुछ ही दूर चलने पर श्यामू बोला—"रामू, मुझे भी भूख लग रही है तुम समोसा कितने का बेचोगे ।" "चवन्नी का" इस उत्तर को पाकर श्यामू ने खुशी-खुशी रामू को चवन्नी देते हुए—"यह लो तुम्हारी भी बोहनी करा देता हूँ और मुझे तुम समोसा दे दो" । लड्डू तथा समोसा खाऐ एक दो को बोहनी कराऐ बड़ी खुशी से धीमे कदमों से चलने लगे । लड्डू खा कर रामू को तो और भूख सताने लगी अब समोसा श्यामू को बेचने पर उसकी आई चवन्नी से और लड्डू खाने की आशा हुई और रामू ने चवन्नी श्यामू को दी और लड्डू खा लिया और इस प्रकार चवन्नी इधर से उधर और उधर से इधर जाती रही और वे एक-दूसरे से लड्डू और समोसा लेकर खाते रहे । खाते-खिलाते रास्ता भी तय हो गया था और वे मेले के बाज़ार में पहुँच गए थे ।

मेले में पहुँचकर जब उन्होंने अपने-अपने सिर से टोकरा उतारा तो वह काफी खाली हो चुके थे । वे एक कोने में दुबके-से बैठे थे, क्योंकि उन्हें दुकान चलाने का अनुभव तो था ही नहीं । न वे कोई आवाज़ लगा रहे थे और न ही किसी ऐसे स्थान पर थे जहाँ से राहगीर गुजरते हुए उन्हें देखते और कुछ खरीद लेते । उनके पास कोई ग्राहक नहीं आया । बैठे-बैठे वे ऊँघ से रहे थे । कुछ ही देर में श्यामू बोला—"अरे रामू, भूख लग रही है । कोई आ भी नहीं रहा । चल तू मुझे ही एक समोसा बेच दे ।" उसने रामू को वह चवन्नी अपनी जेब से निकाल कर दी और समोसा लेकर खा लिया । फिर रामू को भूख लग आई । उसने श्यामू को चवन्नी देकर लड्डू खा लिया और इस प्रकार शाम तक यही क्रम चलता रहा और दोनों के टोकरे खाली हो गए ।

टोकरे खाली हुए देख कर रामू श्यामू से बोला—"अब तो सब कुछ बिक गया । चलो यह देख लें हमने आज कितने-कितनें पैसे कमाए । और दोनों ने मुस्कान भरे चहरों से हाथ अपनी-अपनी जेब में डाले ।

"अरे यह क्या, मेरी जेब तो खाली है" श्यामू बोला

"और मेरी जेब में सिर्फ एक चवन्नी है", रामू बोला

दोनों एक दूसरे का मुँह ताकने लगे । कभी अपने टोकरे की ओर देखते तो कभी अपनी जेबों को टटोलते और फिर एक दूसरे की ओर आश्चर्य से देखने लगते । वे शायद यह सोच रहे थे कि हमने मुफ्त में तो किसी को कुछ दिया ही नहीं, मोल पर ही दिया है, तो आखिर सारे पैसे कहाँ चले गए, सिर्फ एक चवन्नी कैसे रह गई ! वे यह भूल गए थे कि सब-कुछ तो हम ही खा गए तो और पैसे कहाँ से आते ।

तो देखा बच्चो, कितने बुद्धु थे रामू और श्यामू । जो काम से जी चुराते हैं और सिर्फ खाने-पीने में ही ध्यान रखते हैं, उनका यही हाल होता है । वे, जो कुछ कमाई नहीं करते, खाते-पीते मौज उड़ाते हैं, आखिर में वे खाली के खाली ही रह जाते हैं । उनकी न इस लोक में कद्र होती है, न उस लोक में । वे न तो लोक पसन्द बन पाते हैं, न प्रभु पसन्द और न ही मन पसन्द ।

नैनीताल के आस पास गांवों में पद यात्रा द्वारा संदेश देने वाले भाई बहिनों का एक ग्रुप

'भारत एकता युवा पद यात्रा' के कटक में पहुंचने पर युवा उत्थान समारोह में प्रवचन करते हुए भ्राता देवेन्द्र दास जी।

चिरकुंडा में निरसा जागृति स्टेडियम में प्रदर्शनी का उद्घाटन ए.वी. राय चौधरी, माइनर्ज़ सुप० कर रहे हैं

मोदी नगर सेवा केन्द्र की ओर से त्रिद्विसीय पद यात्रा का कार्यक्रम रहा। यात्रा पर जाती हुई ब्र०क विनोद तथा अन्य भाई बहिनें।

पुरी से निकाली गई पद यात्रा के अवसर पर दादी प्रकाशमणि जी शिव ध्वज देते हुए

"युवा जागो···क्रांति से शांति की ओर चलो"

ब्र० कु० प्रकाश, भोपाल

(हे मानवता के रक्षक···समाज के सशक्त स्तम्भ···होवनहार देव आत्माओ···हे स्वर्णिम युग के सूत्रधार एवं कर्णधार···युवाओ जागो···अपनी शक्ति को पहचानो और···क्रान्ति से शान्ति की ओर चलो।)

यही वह देश है जहाँ राम, कृष्ण, बुद्ध, प्रहलाद, ध्रुव तथा विवेकानन्द जैसे दिव्य पुरुषों व महान् विभूतियों ने मानवता के प्रति त्याग, बलिदान व सेवा का आदर्श चरित्र दर्शाया है।

परन्तु नियति की यह विडम्बना है कि आज का युवक मर्यादा पुरुषोत्तम पूर्वजों की स्थापित मर्यादाओं को तोड़कर गलियों व सड़कों में धृष्टता कर रहा है। वह सत्य, अहिंसा को भूल खुलेआम हिंसा, लूट, आगजनी, व्यभिचार एवं बलात्कार जैसे कायरतापूर्ण कार्यों में रत है।

हाय···! यह पावन धरा भी अपने पथ से भटके लाल को गोद में लेते लजा रही है तथा उसकी विकृति पर आँसू बहा रही है···

कहाँ गया···वह राम का त्याग, आदर्श एवं वचनबद्धता ? लक्ष्मण सा दृढ़ व्रतधारी व आज्ञाकारी क्या कोई है ? भरत सा भाई कहाँ गया ? ध्रुव, प्रहलाद सा प्रभु स्नेही क्या कोई है ? भीष्म सा तेजस्वी तथा विवेकानन्द सा युवक कोई है। वस्तुतः नहीं ···। फिर क्या युग की स्थिति सदा से ऐसी रही है जैसी आज है ?

उपरोक्त उदाहरण कल्पना तो नहीं ? क्या युवक सदा से क्रान्तिकारी व हिंसक था ? फिर तो विश्व निर्भय व सुख-शान्ति सम्पन्न कभी न रहा होगा ? आदर्श की बातें सिर्फ कहने की हैं—आदि-आदि। विचार धारायें एवं परिकल्पनायें मानव मन को उद्वेलित एवं भ्रमित करती हैं, विचारों के इस भँवर में उसे सत्यता का किनारा मिल पाना असंभव लगता है।

कारण कि सत्य तो वही अनुभव कर सकता है जिसने स्वयं के सत्य स्वरूप को जाना हो, फिर नित्य होने वाली घटनायें व विसंगतियाँ मानव मन को और भी कमजोर कर देती हैं उसे स्वयं तथा दूसरों में परिवर्तन लाने की बात मिथ्या-सी प्रतीत होती है।

हम देख रहे हैं कि आज धार्मिक व राजनीतिक नेताएँ तथा समाज का जिम्मेदार वर्ग स्वार्थ सिद्धि के लिए युवकों को हिंसक कार्यों में अगुआ कर उसकी शक्ति का दुरुपयोग कर रहा है। वह उसकी प्रतिभा का मखौल उड़ाकर युवा के चित्र व चरित्र को कलंकित करने पर उतारू है। तथापि समाज के कर्णधार सयाने लोग एवं धर्मवेत्ता युवकों के पतन को रोकने व उन्हें सही दिशा देने का कोई मार्ग नहीं सुझाते। वे प्रायः यह कहते हुए इस विषय को टाल देते हैं कि अरे यह तो नए जमाने का ही दोष है अथवा आज की पीढ़ी ही गन्दी है। या कुछ लोग यह भी कहते देखे जाते हैं कि इस उम्र में जोश होता ही है या युवकों का तो काम ही है तोड़-फोड़ दंगे आदि करना। ये तो सुधर ही नहीं सकते हैं आदि। परन्तु यथार्थ में ऐसा कथन नीतिपूर्ण, न्यायपूर्ण व सत्य नहीं है। वरन यह सामाजिक विचारकों व जिम्मेदार व्यक्तियों की दायित्व-हीनता युवावर्ग के प्रति उदासीनता सिद्ध करता है।

पुनश्च यह अवधारणा युवकों के मन में समाज के ऐसे उच्चिष्ठ वर्ग के प्रति घृणा का भाव भी पैदा करती है।

अतः यहाँ हम उन मूलभूत कारणों पर विचार करेंगे जिससे युवा शक्ति क्रान्ति के बजाय शान्ति पथ पर अग्रसर हो सकती है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि भारत सोने की चिड़िया कहलाता था। यहाँ स्वर्ग था, सर्वत्र शान्ति, सुख व प्रेम की धारा बहती थी। सार्वभौम एक राज्य, एक कुल, एकमत व एक धर्म था। कहीं

लड़ाई-झगड़े, हिंसा आदि नहीं थी तथा उस स्वर्णिम काल अथवा सतयुग में 'श्रीकृष्ण' जैसे आदर्श युवक का राज्य था।

हर नर-नारी पावन व दिव्य गुण सम्पन्न थे। यदि सूक्ष्मता से देखें तो इस सम्पन्नता का मूल आधार पवित्र विचार एवं आत्मिक वृत्ति ही थी तथा इस आत्मीयता के कारण ही वहाँ मतैक्य था, आपसी झगड़े, विवाद और तेरे-मेरे की भावना नहीं थी।

परन्तु कालान्तर में द्वापर काल से धीरे-धीरे मनुष्य का नैतिक पतन होता गया तथा मतमतान्तर उत्पन्न हुए जिससे धर्म तथा राजनीति अलग-अलग बँट गए। साथ ही कलियुग के अन्त तक धर्म भी अनेक शाखाओं में विभक्त हो गया और आत्मा के सत्य धर्म को भूल मनुष्य देहाभिमानी बन गया।

स्वयं तथा दूसरों को देह के रूप में देखना तथा देह के रूप में बरतना इसे ही देहाभिमान कहा जाता है जो आज के युवा की विकृति का भी मूल कारण है।

अतएव आज युवा में आध्यात्मिक जागृति की आवश्यकता है जिससे उनका सही दिशा निर्देशन संभव है।

इसके लिए युवाओं से मेरा नम्र निवेदन है कि वे यदि निम्न बातें जीवन में धारण कर लें तो निश्चित ही युवा पीढ़ी सर्वश्रेष्ठ बन सकती है तथा इस प्रकार युवक व युवतियां अपनी आत्मा की असीम उर्जा शान्तिमय—शीतल क्रान्ति द्वारा नए विश्व के निर्माण में लगा सकते हैं।

1. देह नहीं अपने को आत्मा समझो—दैहिक दृष्टि से जाति, रंग, रूप तथा भौतिक आकर्षण आत्मा की उर्जा को क्षीण करते हैं इसके कारण ही व्यभिचार, फैशन, लड़ाई-झगड़े, हिंसा आदि बुराइयों का जन्म होता है। इसलिए स्वयं को बिन्दु रूप पवित्र व शान्ति स्वरूप आत्मा समझो। आत्मा ही अविनाशी व सत्य है शरीर तो विनाशी है।

2. विश्व को परिवार समझो—आज संसार में दैहिक धर्मों के आधार पर ही तेरे-मेरे की व्यर्थ दीवारें खड़ी हैं जिसने विश्व का प्यार व सुख-चैन टुकड़े-टुकड़े कर दिया है। जबकि हैं तो हम सभी एक ही परमपिता परमात्मा की सन्तान, अतएव हम सिर्फ यह नारे न लगाएँ कि हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सब हैं आपस में भाई-भाई, वरन् हमारा व्यवहार भाईचारे का व आत्मीयता का हो। वह तभी संभव है जब हम रंग, रूप, भाषा, जाति, देश आदि की सीमा से हटकर आत्मिक नाते से सारे विश्व को एक परिवार समझें। हमारे हृदय में सर्व के प्रति रहम व शुभ भावना हो।

3. गुणग्राही बन गुणों का दान करो—दूसरों के अवगुण देखने से तो और ही मन गन्दा होता है तथा उससे हमें क्या लाभ मिलता है? अतः दूसरों के अवगुण देखना तो कीचड़ को मथकर घी निकालने जैसी असंभव बात है। इसलिए हमें हंस की तरह सभी के अवगुणों को नज़रअन्दाज़ करते हुए उनके गुण उठा लेने चाहिएं। इस प्रकार की मनोवृत्ति रखने से हम गुणों से मालामाल तो बन ही जायेंगे साथ ही हमारे मन में दूसरों के प्रति, निंदा, घृणा, ईर्ष्या, परचिन्तन जैसे कीटाणु नहीं पनपने पाएँगे तथा हमारी मानसिकता सदा स्वस्थ व सक्रिय रहेगी। इस प्रकार गुणी बन हमें मन-वचन व कर्म द्वारा दूसरों को भी गुणों का दान देना चाहिए जिससे उन आत्माओं की भी हमको दुआएँ मिलती रहेंगी।

4. कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो—युवा वर्ग में जोश तो होता ही है परन्तु उस जोश के साथ-साथ हमें होश में भी रहना जरूरी है। तात्पर्य यह है कि चाहे कोई हमारे साथ भले ही कटु व्यवहार करे या कोई व्यक्ति कुछ गलती कर डाले परन्तु हम हर समय बोलने से पहले थोड़ा-सा रुक जाएँ व सोच-समझ लें कि इस प्रकार की वाणी की अमुक व्यक्ति पर क्या प्रक्रिया होगी अथवा मुझसे यदि कोई ऐसा व्यवहार करे तो मुझे कैसा प्रतीत होगा, तो हमारी वाणी नियंत्रित बन सकती है। साथ ही ध्यान रहे कि जहाँ आवश्यक

है वहीं हम संक्षिप्त व मधुर बोल बोलें। क्योंकि अधिक बोलने से आत्मा की उर्जा भी क्षीण होती है और लोगों पर प्रभाव भी नहीं पड़ता। इसके विपरीत मधुर वाणी में ऐसा जादू होता है जिससे बड़े से बड़े कार्य हो सकते हैं, मधुरता जलते प्राणी को भी शीतल कर देती है फिर मीठा बोलने में हमारा खर्च ही क्या होता है।

5. क्रोधी कायर होता है। क्रोध को प्रेम से जीतो—कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि युवकों में नया खून होने के कारण उन्हें गुस्सा ज्यादा आता ही है। अथवा गुस्सा न किया जावे तो काम नहीं चल सकता। परन्तु यह धारणा मूलतः कमजोर व कायर व्यक्तियों की है। देखा भी जाता है कि पतले, दुबले व विक्षिप्त व्यक्ति को ज्यादा क्रोध आता है तथा प्रायः वे लोग ही जिनकी बातों में कोई तथ्य नहीं होता अथवा जो कोई अनैतिक कार्य करते हैं, क्रोध को ढाल के रूप में प्रयोग किया करते हैं। फिर क्रोध की स्थिति में कोई अधिक समय तक नहीं रहता न ही किसी को क्रोध पसन्द है, अतः यह स्पष्ट है कि क्रोध एक मानसिक ज्वर है जिसकी दवा प्रेमयुक्त व्यवहार है। कहा भी गया है "प्रेम पत्थर को भी पिघला देता है।" फिर हम क्रोध को अपनाएँ ही क्यों ? जबकि हम आत्माओं का मौलिक गुण प्रेम व शान्ति है और व्यर्थ क्रोध करने से कोई बिगड़ा काम बन भी तो नहीं जाता। अतः सदा स्मृति में रखें मैं शीतल आत्मा हूँ तो क्रोध हमारे पास फटक नहीं सकता।

6. सुख दो और सुख लो—इस बात से यहाँ तात्पर्य यह है कि हमारा व्यवहार, हमारी चलन, देखना, बोलना आदि आदतें ऐसी होना चाहिए जो किसी को आपत्तिजनक व अमर्यादित न लगे, किसी के मन को हमारे वचनों या कर्म से ठेस न पहुँचे। इसके लिए सदा कोई भी कर्म करने व वचन बोलने से पूर्व हम सोचें कि क्या यह मुझे प्रिय हैं, यदि नहीं तो दूसरों के प्रति भी उसका प्रयोग नहीं करना चाहिए। बल्कि सदा ही हमारी भावना दूसरों के दुख-दर्द बाँटने व उनके सहयोगी बनने की होनी चाहिए। ऐसा करने से अन्य आत्मायें तो सुख का अनुभव करेंगी ही, साथ ही हमें भी सुख मिलेगा और दूसरों की दुआयें भी। यह देखा भी गया है कि दूसरों को दुख देने वालों का दुःखद अन्त भी होता है फिर हम क्यों न सबको सुख देकर सदा सुखी बनें।

7. निर्माणता ही महानता है—आकर्षक वेशभूषा, व भौतिक शान-शौकत के मिथ्या अभिमान से कोई किसी के हृदय में स्थान नहीं बना सकता बल्कि प्रायः ऐसे लोगों से अन्य लोग घृणा ही करने लगते हैं। अतएव हमें इन वैभवों में बरतते हुए भी सदा सर्व के प्रति सम्मान रखना चाहिए तथा नम्र-चित्त बनना चाहिए। नम्र व्यक्ति उग्र वातावरण में भी विचलित नहीं होता तथा यह नम्रता व झुकने का संस्कार ही हमें सबकी नजरों में महान बनाएगा।

8. ईश्वर ने शक्ति विनाश हेतु नहीं रचना हेतु दी है—हर युवा में शारीरिक शक्ति के साथ-साथ असीम आत्मिक उर्जा है। उसके मन में भरपूर कार्य क्षमता, अटूट विश्वास, कठोर परिश्रम और उमंगों का आवेग समाया है जिसे यदि रचनात्मक मोड़ नहीं मिल पाया तो वह व्यर्थ कार्यों में विघटित होने लगेगी।

अतः ईश्वर द्वारा मिली इस असीम शक्ति से हम नए-नए शुभ संकल्प साकार करें, नव निर्माण करें।

हम चाहे जिस भी क्षेत्र में हों या हमारे पास जो भी गुण, शक्ति या कला है हम यह समझें कि यह मानव कल्याण के लिए ईश्वर द्वारा मुझे उपहार मिला है जिसे मुझे सर्व को बांटना है तो निश्चित ही हम समाज व देश के लिए रचनात्मक कार्य कर सकते हैं।

9. सामाजिक सुरक्षा की जिम्मेवारी हमारी है—समाज की स्थूल सुरक्षा के साथ-साथ समाज की नैतिक सुरक्षा की जिम्मेवारी भी हमारी है। अर्थात् युवा को समाज में व्यसनों व कुरीतियों को दूर

(शेष पृष्ठ १२ पर)

कुछ नया

(विशेष पदयात्रा करने वाले युवा भाई-बहनों के प्रति मधुर सन्देश)

ब्र० कु० सूरज प्रकाश, सहारनपुर

हे पदयात्री युवा साथियो, बढ़ते ही जाओ हिम्मत न हारो।
राह में अगर आये माया, महावीर बन उसे ललकारो।
कौन साथी है तुम्हारा, ये जरा मन में विचारो।
तूफानों से लोहा लेकर, नित साहस-शौर्य निखारो।
और करो कुछ नया ! कुछ नया !! कुछ नया !!!

कुछ नया : जो श्रेष्ठ और महान हो।
कुछ नया : ऐसा विधि विधान हो।
कुछ नया : जिसे देख जग हैरान हो।
कुछ नया : जो कहानियत की शान हो।

कुछ नया : जो रूढ़ियों को तोड़ दे।
कुछ नया : जो द्वेष का घट फोड़ दे।
कुछ नया : जो बाप से बुद्धि जोड़ दे।
कुछ नया : जो छाप सब पर छोड़ दे।

कुछ नया : जो मन की पीड़ा हरे।
कुछ नया : जो चित में शान्ति करे।
कुछ नया : जो रूह में शक्ति भरे।
कुछ नया : हर अधर पर बंशी धरे।

कुछ नया : जो स्वयं को सब जान लें।
कुछ नया : जो बाप को पहचान लें।
कुछ नया : बदलेगी दुनिया मान लें।
कुछ नया : घर चलने की ठान लें

कुछ नया : जो राष्ट्र का उत्थान हो।
कुछ नया : जो विश्व का कल्याण हो।
कुछ नया : त्याग तप बलिदान हो।
कुछ नया : सबके लिये वरदान हो।

कुछ नया : जो बिगुल क्रान्ति का बजे।
कुछ नया : जो सोये हैं, नींद वो तजे।
कुछ नया : जो साज शान्ति के सजे।
कुछ नया : चहुँ ओर खुशियाँ और मजे।

कुछ नया : जो प्रेम की प्रतिमूर्ति हो।
कुछ नया : जिसमें न तनिक सुस्ती हो।
कुछ नया : पुरुषार्थ में स्फूर्ति हो।
कुछ नया : जो एक दिव्य अनुभूति हो।

कुछ नया : जो बुद्धि का ताला खोल दे।
कुछ नया : जो प्रेम का रस घोल दे।
कुछ नया : माया का रस घोल दे।
कुछ नया : बदल इतिहास-भूगोल दे।

(पृष्ठ ११ का शेष) **युवा जागो·····**

करने के प्रति भी सचेष्ट होना चाहिए—यदि नए उम्र के युवक आगे आकर युवा पीढ़ी के अलावा समाज के अन्य लोगों को बुराइयों तथा व्यसनों—जैसे बीड़ी, सिग्रेट, नशा, जुआ, वेश्यावृत्ति आदि से जनित क्षति का ज्ञान कराएँ व उन्हें छोड़ने को कहें तो अवश्य ही उन पर इसका काफी प्रभाव पड़ेगा।

इसके फलस्वरूप सामाजिक कुरीतियों, गरीबी तथा अपराधों का निदान तो होगा ही साथ ही साथ अनेकानेक मनुष्यों का जीवन निरोगी, सुख-शान्तिमय, सच्चरित्र व श्रेष्ठ बनेगा। युवा शक्ति के साथ यदि आध्यात्मिकता का समन्वय हो जाए तो ऐसे ही अनेक प्रकार की सेवा व मानव कल्याण का कार्य युवक कर सकते हैं। और अवश्यमेव उक्त स्वर्णिम विचारों की धारणा करने से इस धरा पर स्वर्णिम संसार निर्मित होगा।

अतः हे मानवता के रक्षक···, होवनहार देव-आत्माओं···, हे शान्ति के क्रान्ति दूत, स्वर्णिम युग के सूत्रधार एवं कर्णधार···युवाओ जागो···अपनी शक्ति पहचानो और क्रान्ति से शान्ति की ओर चलो। ○

अनोखी राखी

ब्र० कु० आत्मप्रकाश, आबू

पात्र

पिंटु—१२ वर्षीय बालक, मुन्नी—पिंटु की छोटी बहन,
विजय—पिंटु के पापा, मीना—पिंटु की मम्मी,
संजय—पिंटु के अंकल, लक्ष्मी—मीना की पड़ोसी,
दीपक—लक्ष्मी के पति, ब्रह्माकुमारी ज्योति,
शामू काका—विजय का मित्र,

(मीना किचन में भोजन बना रही है, पिंटु मीना के पास खड़ा है। दूसरे कमरे में पिंटु के पिताजी सोये हैं, जहाँ मुन्नी अपनी पढ़ाई पढ़ रही है)

पिंटु—मम्मी, पापा के कमरे में दीवार पर जो फोटो लगा हुआ है, उसमें पापा के साथ कौन है ?

मीना—वो तुम्हारे पापा का छोटा भाई संजय है।

पिंटु—(उत्सुकता से)—मम्मी, अभी वो अंकल कहाँ रहते हैं ?

मीना—पता नहीं बेटा, जब तुम छोटा ही था तो एक दिन तुम्हारे पापा ने गुस्से में आकर उसे घर से बाहर निकाल दिया था। उसका अलबेलापन तुम्हारे पापा को पसन्द नहीं आता था।

पिंटु—तो अभी वो अंकल कहाँ होंगे ?

मीना—ये तो भगवान ही जान सकता है बेटा। बेटा पिंटु, देखो तो सही तुम्हारे पापा नींद से जागे या नहीं।

पिंटु—मम्मी, मैं अभी उन्हीं के कमरे से ही आ रहा हूँ···अभी तक तो वे सोये ही हैं···

मीना—पता नहीं, कब उठेंगे और कब तैयार होंगे। उन्होंके ऑफिस जाने का समय तो हो रहा है।

विजय—(हड़बड़ाकर घड़ी को देखते हुए)—अरे, ९ बजने में ५ मिनट ही कम हैं···बेटी मुन्नी, देखो तो ज़रा तुम्हारी मम्मी ने खाना बनाया है या नहीं···

मुन्नी—पापा, मैंने अभी दो मिनट पहले ही देखा तो मम्मी प्रेशरककर में दाल चढ़ा रही थी।

विजय—(गुस्से से किचन में जाकर) मीना, तुम्हारा हर दिन का यही है रोना, हजार बार कह चुका हूँ कि मुझे ९ बजे भोजन तैयार चाहिए··· बत्तमीज कहीं की···शर्म नहीं आती तुझे···

मीना—(घबराते हुए)—आप स्नान करके तो आओ, तब तक मैं भोजन तैयार रखती हूँ···

(विजय स्नान करने चला जाता है)

विजय—(स्नान के बाद भोजन कक्ष से)—मीना, ले आओ जल्दी भोजन···

मीना—बस एक मिनट, अभी लाती हूँ···

विजय—(क्रोध से गरजते हुए)—बेवकूफ कहीं की, चूल्हे में फेंक दो तुम्हारा खाना···तुमने मुझे अभी तक नहीं जाना···मैं जा रहा हूँ अभी ऑफिस···

(विजय ऑफिस चला जाता है)

मीना—(पश्चात्ताप से)—हाय भगवान, भूखे ही ऑफिस चले गए·· थोड़ा-सा भी धीरज नहीं रखते···

मुन्नी—मम्मी, तुम चिन्ता नहीं करो, पापा को मैं ऑफिस में भोजन पहुँचा दूंगी।

मीना—बेटी, तुझे क्या पता, तुम्हारे पापा ऑफिस में भोजन करना पसन्द नहीं करते···पता नहीं मैंने कितने पाप किये हैं जो मुझे बात-बात पर गुस्सा सहन करना पड़ता है···

मुन्नी—मम्मी, पता नहीं आजकल क्या हुआ पापा को ! एक दिन मैं पापा से फीस के पैसे लेने गई थी तो ऑफिस में पापा जोर से फाईलें फेंकते हुए बाबू लोगों पर गुस्से से बरस रहे थे···

मीना—(उदासी से)—बेटी, जब से इन्होंने शामू काका से दोस्ती की, तब से ये उन्होंके संग के रंग से शराब और सट्टे के शिकार बन गये। परिणामतः गुस्सा करना उन्हों का स्वधर्म हो बन

गया। सट्टे की आदत से तो एक बार हम सभी पर मोहताजी आई थी।

मुन्नी—(आश्चर्य से)—मम्मी, पापा सट्टा भी खेलते हैं, मुझे तो आज ही पता चला।

मीना—आओ, भोजन तैयार है, मैं थालियाँ परोसती हूँ···

(दोनो खाना खाकर स्कूल जाते हैं)

(पर्दा गिरता है)

दृश्य—२

मीना—(स्वगत)—मेरी तकदीर में क्या ऐसा ही क्रोधी और शराबी पति लिखा था। देना ही था भगवान को तो अच्छा देना था, जो भी मैंने अपने जीवनरूपी बगियाँ में आशाओं के पौधे लगाए थे उन्हों का तो इसने एकदम नाम निशान ही मिटा दिया। इसके व्यंगबाण से तो मेरा हृदय अन्दर तक बिंध जाता है। लगता है शायद नारी जीवन उलहने सुनने के लिए ही बना है। मेरा भया तो भाभी पर ऐसा कभी भी क्रोध नहीं करता···

(अचानक बाजू के मकान के खिड़की से पड़ोसन लक्ष्मी की आवाज आती है)

लक्ष्मी—पिंटु की मम्मी, क्यों क्या बात है, आज अकेली ही बैठी हो, किस सोच में डूबी हो···

मीना—(चौंककर)—कौन, लक्ष्मी बहन···पता नहीं आज मुझे रह-रहकर भैया की क्यों याद आ रही है···

लक्ष्मी—याद क्यों नहीं आयेगी बहन, कल राखी का त्यौहार जो है। मैंने तो अपने भैया को २ दिन पहले ही राखी भेज दी।

मीना—मैं भी आज शाम तक पिंटु के पिताजी से राखी मंगवाकर भैया को भेज दूँगी···आजकल शायद आपके पतिदेव दीपक जी कहीं बाहर गाँव गए हैं क्या···

लक्ष्मी—हाँ बहन, शायद शाम तक वापस लौटेंगे। कितनी देर से मैं छत की मुंडेर पर खड़ी होकर उन्हों की प्रतीक्षा कर रही हूँ···

(पिंटु और मुन्नी स्कल से लौटकर आंगन में खेल रहे हैं)

मीना—शायद पिंटु के पिताजी भी ऑफिस से वापस आते होंगे···

(टैक्सी मीना के दरवाजे पर आकर खड़ी हो जाती है)

लक्ष्मी—(टैक्सी को देखते हुए)—मीना बहन, दरवाजा खोलो, कोई टैक्सी में आया है···

मीना—(दरवाज़ा खोलते हुए)—अरे दीपकजी··· आ···टैक्सी में और कौन है···

दीपक—(गंभीर स्वर से)—पिंटु के पिताजी··· लेकिन···बेहोश स्थिति में···

मीना—(चीख मारते हुए)—हाय राम, कैसी फूटी तकदीर है मेरी···

(अचरज से टैक्सी को देखते ही पिंटु और मुन्नी दौड़कर पास आते हैं)

पिंटु—(ऊँची आवाज़ से)—मम्मी···मम्मी··· कौन आया है टैक्सी में···

मीना—(अवरुद्ध स्वर से)—तुम्हारे पापा हैं बेटा···

दीपक--शान्त रहो पिंटु···मीना बहन···आओ, पहले पिंटु के पिताजी को अन्दर आराम शैया पर ले चलो···

(पिंटु के पिताजी को अन्दर ले जाते हैं)

मीना—बेटा पिंटु, ज़रा पंखा चलाओ, तुम्हारे पापा को पसीना आ रहा है···

पिंटु—(पंखा चलाते हुए)—मम्मी, आप पापा को प्याज फोड़कर सुंघवाओ, तो शायद पापा जल्दी होश में आयेंगे—

दीपक—पिंटु तुम ठीक कहते हो, ले आओ दौड़-कर जल्दी प्याज···

पिंटु—(प्याज़ देते हुए)—ये लो अंकल···फोड़ो इसको···

(प्याज सुंघाने से धीरे-धीरे विजय की आँखें खुलने लगती हैं)

विजय—अरे···मैं कहाँ हूँ···मैं यहाँ कैसे आया···

दीपक—(धीरज देते हुए)—आप अपने घर में ही हो···अभी और आराम करो···जल्दी ठीक हो जाओगे···

मीना—(धीमे स्वर से)—दीपक जी, आप तो बाहर गाँव टूर पर गए थे, आपकी इन्हों से मुलाकात कैसे और कहाँ हुई ?···

दीपक—(लम्बा श्वास लेते हुए)—मैं रेलवे स्टेशन से टैक्सी में बैठकर घर वापस आ रहा था तो रास्ते में अचानक त्रिमूर्ति चौराहे पर दो स्कूटरों को बुरी तरह टकराते हुए मैंने देखा। मैंने अपनी टैक्सी को रोका और दुर्घटना स्थल पर जाकर देखा तो पिंटु के पिताजी बेहोश स्थिति में रास्ते पर पड़े हुए थे। स्कूटर तो एकदम चूर हो गई थी। पुलिस को मैंने कहा—यह व्यक्ति हमारा पड़ोसी है, अगर आप इजाज़त दो तो मैं इसे अपनी टैक्सी में घर तक पहुँचा दूँ। पुलिस ने कहा इसका पूरा पता हमें लिखकर दो और आप इसे ले जाओ। बाद में इस केस को हम निपटायगे। फिर दो-तीन व्यक्तियों की मदद से इन्हें मेरी टेक्सी में लिटाया और यहाँ ले आया।

मीना—जिस व्यक्ति से इन्होंकी टक्कर हुई, क्या उसको भी कोई चोट लगी थी ?

दीपक—नहीं, वह व्यक्ति एकदम ठीक था···अच्छा, मैं चलता हूँ··· लक्ष्मी मेरी इन्तजार करती होगी···

मीना—दीपक जी, जीवनभर मैं आपका ऐहसान नहीं भूलूँगी···

पिंटु—पापा, आपको कोई चोट तो नहीं लगी···

विजय—(मीना के तरफ देखते हुए)—नहीं बेटा, मुझे तो कोई चोट नहीं लगी, लेकिन लगता है तुम्हारे मम्मी के दिल को चोट लगी है।

मीना—क्यों नहीं लगेगी, अगर आप शराब नहीं पीते तो आपकी यह हालत नहीं होती। आपने तो इस गन्दी आदत से हम सभी की इज्जत पर पानी फेर दिया।

विजय—मीना, मैंने क्या गुनाह किया है, कौन कहता है मैंने शराब पी है···

मीना—आपकी लाल आँखें सबूत दे रही हैं और मुँह से भी शराब की बदबू आ रही है···इस शराब ने तो आपको बिल्कुल खराब कर दिया···

मुन्नी—मम्मो, मुझे भूख लगी है···

मीना—हाँ बेटी, मैं अभी जल्दी खाना बनाती हूँ, आप दोनों पापा के पास बैठे रहो···

(मीना खाना बनाने किचन में जाती है)

पिंटु—मम्मी···खाना तैयार हुआ या नहीं···

मीना—हो गया बेटा, मैं थालियाँ परोसती हूँ, तुम्हारे पापा भी खाना खायेंगे, सवेरे से उन्होंने खाना ही नहीं खाया है···

(सभी खाना खाते हैं)

(पर्दा गिरता है)

दृश्य—तीन

(खाना खाकर सभी आपस में बैठे हुए हैं)

पिंटु—पापा, अभी तो आपकी तबीयत ठीक हो गई होगी।

विजय—हाँ बेटा, मैं बिल्कुल ठीक हूँ।

मुन्नी—पापा, आपको पता है, कल राखी का त्यौहार है···

विजय—नहीं बेटी, मैं तो भूल ही गया था···अच्छा हो गया आपने मुझे याद दिलाई···कल हमारा ऑफिस भी बन्द रहेगा···

मुन्नी—(खुशी से)—पापा, मैं कल पिंटु भया को राखी बांधूगी, मेरे लिए आप एक राखी ले आना।

मीना—और एक मेरे लिये भी, मुझे भी अपने भैया को राखी बांधनी है।

विजय—(गुस्से से)—चुप रहो मीना, तुम्हारे भैया को राखी मैं नहीं भेजने दूंगा। इतने सालों से तुम उसे राखी बाँधती आ रही हो, कभी मदद की है तुम्हारे भैया ने। जब मैं सट्टे में हार गया था, तो ये बच्चे भूखे मर रहे थे, उस समय फूटी कौडी भी मदद नहीं की उसने। तो फिर तुम्हारे राखी भेजकर झूठा प्यार दिखाने का क्या फायदा ?

मीना—आप बुरी आदतों में फँसकर अपना सब कुछ लुटा दोगे, तो क्या आपकी मदद करने का ठेका लिया है मेरे भाई ने। मुझे आपका यह व्यवहार कतई पसन्द नहीं है।

विजय—चाहे कुछ भी हो, इस साल मैं तुम्हें राखी लाकर नहीं दूँगा। दुबारा राखी का नाम मेरे

सामने कभी नहीं निकालना।

मीना—(भीगी आँखें पोंछते हुए)—साल में एक ही बार आपसे राखी माँगती हूं और वो देने को आप इन्कार करते हो···हाय राम···क्या मेरी किस्मत है···ठीक है···इसमें आपका कसूर नहीं··· आप क्या जानोगे भाई-बहन के प्यार को···आपको तो बहन है ही नहीं···

विजय—(झल्लाकर)—ज्यादा बकवास नहीं करो मीना, मेरे जले हुए दिल पर नमक छिड़काने की कोशिश मत करो।

मुन्नी—पापा, आपको कौन-सी मुसीबत है, मम्मी को और मुझको एक-एक राखी लाकर देने में···

विजय—(थप्पड़ मारते हुए)—चुप रहो मुन्नी, तुम भी अपनी माँ जैसी है।

(मुन्नी के कोमल नयनों से आँसू अनवरत बहते हुए देख मीना का हृदय भर आया, भावावेश के कारण रोते-रोते मीना के मुँह से सिसकी निकल गई)

विजय—(पश्चाताप से)—बेटा पिंटु, चलो बाहर···ये तो हैं ही कायर···रोना ही नारियों का मर्दों के दिल को घायल करने का एकमात्र हथियार है···

(पिंटु और उसके पापा बाहर निकल पड़ते हैं)

पिंटु—(चलते-चलते)—पापा, आप क्यों रुक गए।

विजय—बेटा वो देखो सामने से कोई व्यक्ति अपने तरफ तेजी से चलता आ रहा है···लगता है तुम्हारा संजय अंकल है···

पिंटु—संजय अंकल···कौन पापा···हाँ···हाँ··· जिसका आपके कमरे में आपके साथ फोटो है··· लगते तो उसके जैसे ही···

(१२ साल के बाद की मुलाकात में भैया···भैया कहते हुए—नजदीक आते ही संजय अपने बड़े भैया विजय को लिपट जाता है, आँखों से गंगा-यमुना की धारा बहने लगती है)

विजय—संजय, मुझे मेरी गलती माफ कर दो··· मैंने आपको बहुत दुख दिया···मुझे उसकी सजा भी मिली···

संजय—(भीगी हुई आँखों से देखते हुए)—नहीं भैया, ऐसा मत कहो···आपकी शुभ भावनाओं का आश्रय आकाश की तरह मेरे लिए सदा सुलभ था···

(दोनों भाइयों का अनोखा भरत मिलाप देखते हुए पिंटु की भी आँखें भर आईं)

विजय—संजय, आप कैसे हो···

संजय—भैया, आपकी दया से बिल्कुल ठीक हूँ···

विजय—आजकल क्या करते हो···।

संजय—आपका एहसान जीवन भर नहीं भूलूँगा भैय्या·· आपके मुझे घर से बाहर निकालने में कल्याण समाया हुआ था···मेरा अलबेलापन समाप्त हुआ जिससे मैंने पढ़ाई में अच्छी तरह ध्यान दिया तो आज क्लास वन ऑफिसर बना हूँ···

पिंटु—(अचरज से)—अंकल, आपके हाथ में ये चमकीली चीज क्या है ?

संजय—(खुशी से)—बेटा, यह राखी के त्यौहार का निमन्त्रण पत्र है, मैं आपके पापा को देने के लिए ही लाया हूँ।

पिंटु—हमें दिखाओ तो सही अंकल···

संजय—क्यों नहीं बेटे, ये लो देखो···

पिंटु—(निमन्त्रण पत्र पढ़ते हुए)—**"जो बांधेगा यह राखी, बन जाएगा सदा सुखी"** क्या यह राखी कोई दूसरी राखी है अंकल ?

संजय—हाँ बेटा, यह है अनोखी राखी, जो बनाती है हमें सदा सुखी। यह राखी बाजार में नहीं मिलती, क्योंकि यह दुनिया से निराली राखी है।

पिंटु—अंकल, ये अनोखी राखी कहाँ मिलती है ?

संजय—यह राखी ब्रह्माकुमारी आश्रम में मिलती है।

विजय—(गम्भीरता से)—क्या हमें भी यह राखी मिल सकेगी ?

संजय—हाँ भैया, जरूर मिलेगी, लेकिन कल सुबह ७ बजे आपको आश्रम आना होगा।

पिंटु—लेकिन अंकल, ये आश्रम कहाँ है ?

संजय—यह आश्रम ओम शान्ति गली में, सुख शान्ति भवन में है।

पिंटु—अंकल, हम कल सुबह ७ बजे जरूर आयेंगे, आप वहाँ ही हमारी प्रतीक्षा करना।

संजय—अच्छा भैया, मैं चलता हूँ, कल सवेरे आपको मिलूंगा।

विजय—(चुपके से)—पिंटु, घर जाने के बाद यह बात अपनी मम्मी को नहीं बताना। हम दोनों जल्दी उठकर नहा-धोकर आश्रम जायेंगे।

पिंटु—लेकिन पापा, आप सवेरे ७ बजे का अलार्म लगा देना क्योंकि आपको आदत ही है ९ बजे उठने की।

विजय—अच्छा, लगा दूँगा, अभी घर वापस चलो बेटा···

(दोनों घर वापस जाकर चुपचाप सो जाते हैं)

(पर्दा गिरता है)

दृश्य—४

पिंटु—(अलार्म सुनते हुए)—पापा···जल्दी उठो··· ७ बज चुके हैं···

मीना—बेटा पिंटु, सोने दो पापा को, क्यों इतने जल्दी उठाता है···

पिंटु—(घबराकर)—मम्मी, पापा ने ही कहा था मुझे उठाने के लिए···

मीना—क्यों, उन्होंको इतने सवेरे कौन-सा काम है···

विजय—कुछ नहीं मीना, हमें सैर करने जाना है···

(पिंटु और उसके पापा नहा-धोकर घर से बाहर निकलते हैं)

पिंटु—(चलते-चलते)—पापा, शायद यही है वो सुख शान्ति भवन···

विजय—(अन्दर प्रवेश करते हुए)—हाँ बेटा···ये देखो बोर्ड···ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय···कितना शान्त और पवित्र वायुमण्डल है यहाँ···

संजय—(दोनों को देखते हुए)—आइए बड़े भैया···आइए···इस बाजू के हॉल में ब्रह्माकुमारी ज्योति बहन राखी के त्यौहार का रहस्य समझा रही हैं···आप भी इस सभा में बैठिए···

(दोनों बैठकर शान्ति से प्रवचन सुन रहे हैं)

ब्रह्माकुमारी—परमात्मा शिव जो हम सभी आत्माओं के परमपिता हैं, अभी वर्तमान समय अवतरित होकर प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से हमें पतित से पावन बनाने के लिए अर्थात् इन विकारों रूपी शत्रुओं से तथा बुरी आदतों से छुड़ाने के लिए पवित्रता के बन्धन रूपी राखी बाँधते हैं। जो यह बन्धन दृढ़ संकल्प से बाँधता है वो स्थाई सुख-शांति सम्पन्न जीवन जीने का अधिकारी बनता है। यह अनोखी राखी ही हमारे जीवन की इन विकारों से रक्षा करती है।

संजय—(भाषण के उपरान्त)—आइए भैया, आपको ज्योति बहनजी से मिलाते हैं।

(संजय दोनों को ज्योति बहन के पास ले जाता है)

विजय—नमस्ते बहनजी···

ज्योति बहन—नमस्ते भैया···आइए बैठिए···

संजय—बहनजी, आप हमारे बड़े भाईजी विजय हैं और ये उन्होंका बेटा पिंटु, ये आपसे राखी बंधवाना चाहते हैं···

ज्योति बहन—हाँ···हाँ···जरूर···क्यों नहीं··· विजय भैया को विजय का तिलक और पवित्रता की राखी ज़रूर बाँधेंगे।

(ज्योति बहन पिंटु तथा उसके पापा को राखी बाँधती है)

विजय—(स्नेहविगलित स्वर से)—बहनजी, अभी मैं आपको क्या दूँ? ये लो मेरी तरफ से छोटी भेंट (१० रुपये का नोट हाथ में देते हुए)···

ज्योति बहन—भाईजी, हम आपसे खर्ची लेंगे, लेकिन ये नहीं···जिन विकारों ने हमें दुखी, अशांत बनाया, उन्होंका दान शिव बाबा लेते हैं।

विजय—बहनजी, इतने सालों से जिन विकारों का तथा बुरी आदतों का जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा हुआ है, उन्हें छोड़ना तो मुश्किल ही लगता है।

ज्योति बहन—देखो भैया, जब हम शिव बाबा से प्रतिज्ञा करते हैं तो बाबा हमें बुराइयों को छुड़ाने के लिए युक्ति और शक्ति दोनों प्रदान करते हैं जिससे असम्भव बात भी हमें सम्भव अनुभव होती

है। कुछ दिनों के बाद धीरे-धीरे इन सब विकारों से मुक्ति मिलती है। ऐसा तो यहाँ आने वाले हजारों भाई-बहनों का अनुभव है।

विजय—बहनजी, आपके दिव्य जीवन को देखकर मुझे भी एहसास हो रहा है कि मैं भी छोड़ सकूँगा···

ज्योति बहन—दूसरी बात है, जब हमें शिव बाबा सत्य ज्ञान समझा कर ज्ञान चक्षु की (Real Eye) सौगात देते हैं तो आत्मा में (Realise) करने की शक्ति आती है। फलस्वरूप Checking और Changing Power हमें स्वतः प्राप्त होती है।

विजय—अच्छा बहनजी, मैं आज शिव बाबा से प्रतिज्ञा करता हूँ और इन विकारों का तथा बुरी आदतों का दान देने का दृढ़ संकल्प करता हूँ। बहनजी, आपसे निवेदन है कि आज आप हमारे घर चलकर मेरी धर्मपत्नी मीना और बेटी मुन्नी को ऐसी अनोखी राखी बाँधें।

ज्योति बहन—हाँ···हाँ···अभी चलो···शुभ काम में देरी क्यों करें···सभी मिलकर पिंटु के घर जाते हैं, ज्योति बहन मीना को और मुन्ना को राखी का रहस्य समझाकर राखी बाँधती है, विजय के स्नेह भरे व्यवहार से मीना प्रभावित होती है।

विजय—मीना, इस अनोखी राखी की प्राप्ति हमें ज्योति बहनजी की ही कृपा से हुई···

ज्योति बहन—नहीं···नहीं···इस ज्योति की कृपा से नहीं···उस परम ज्योति के अर्थात शिव बाबा की कृपा से···अच्छा मैं आश्रम जाती हूँ···विजय के मुख से भावभीनी पंक्तियाँ निकलती हैं—

हे परम ज्योति—तुझसे ही हुई अनोखे राखी की प्राप्ति। जिससे तुम्हारी याद भुलाई नहीं जाती।

(पर्दा गिरता है)

प्रतिज्ञा

ब्र० कु० अर्चना, चण्डीगढ़

मुझको है पूरा-पूरा विश्वास,
मैं करूँगी बाबा की पूरी आस।
आदर्श जीवन व्यतीत करूँगी,
दिव्य गुणों की धारणा करूँगी,
लूँगी अतिइन्द्रिय सुख का श्वास,
मैं करूँगी बाबा की पूरी आस।
ज्ञान का दीप लेकर, प्रेम की ज्योति मैं जगाऊँगी,
माया से लड़कर, उसको सबक मैं सिखाऊँगी,
बाबा की मस्ती में मस्त रह, करती रहूँगी ज्ञान डांस,
मैं करूँगी बाबा की पूरी आस।
नन्हा सा जीवन मेरा,
विश्व बदलना कर्त्तव्य मेरा,
पुराने संस्कारों को करूँगी खलास,
मैं करूँगी बाबा की पूरी आस।
बाबा के नैनों की नूर हूँ मैं,
फूलों के गुलदस्ते में इक नन्ही सी कली हूँ मैं,
करती रहती सदा बाबा संग रास,
मैं करूँगी बाबा की पूरी आस।
रावण की नहीं, बनके भुजा ब्रह्मा की,
बुझा दूँगी आग हाहाकार की,
बरसा करके शीतलता की बरसात,
मैं करूँगी बाबा की पूरी आस।

लक्ष्य और हमारा लक्ष्य

ब्र० कु० शकुन्तला कानोडिया, बहल (हरियाणा)

ज्ञान मार्ग पर चलते-चलते कई बार हमारा लक्ष्य धुँधला व फीका-सा पड़ जाता है। समय श्वांस और संकल्प लक्ष्य की तरफ न जाकर ज्ञान के विस्तार में खो जाते हैं। फिर धीरे-धीरे बाबा को छोड़ने के संकल्प चलने लग पड़ते हैं। कारण ? बाबा ने हमें बहुत ऊँचा लक्ष्य दिया है। हमारी मंजिल बहुत ऊँची है। परन्त लक्ष्य पर पहुँचते हुए हमारी यह यात्रा नीरस न हो, हम थक न जाएँ इसके लिए अनेक सुविधाएं दी हैं। जैसे—अलौकिक खुशी, सन्तुष्टता, निश्चिन्तता, सामाजिक पारिवारिक व्यर्थ के बन्धनों से मुक्ति, पवित्रता, न्यारा व प्यारापन, सादगी आदि-आदि। इन सब गुणों व सुविधाओं पर चलते हुए हम अपने लक्ष्य तक पहुँच जाएँगे। अब देखना यह है कि इस ज्ञान मार्ग में मुझे प्यारे ते प्यारी चीज़ कौन-सी लगती है ? सबसे प्यारा हमें अपना लक्ष्य होना चाहिए ! अगर अपने लक्ष्य से प्यार हटकर हमारा तन-मन-धन मार्ग की इन सुविधाओं में ही अटक जाता है तो लक्ष्य धीरे-धीरे धुँधला पड़ जाता है और रास्ते में ही—सेवा करनी है, पवित्र रहना है, यहाँ का वातावरण अच्छा लगता है, पवित्रता बहुत अच्छी है, यहाँ पर बहन भाइयों का पवित्र सम्बन्ध बड़ा ही मनमोहक है, टीचर बहन का व्यवहार बड़ा अच्छा है, व्यर्थ के रीति-रिवाजों से छुटकारा मिल गया, निर्बन्धन हो गये—इन सुख-सुविधाओं का रस हमारे उद्देश्य (Aim object) को भुला देता है। हमारा मुख्य लक्ष्य जो है कि मैं आत्मा हूँ, बाबा संगम पर आया हुआ है, मैं बाप के वर्से का बालक सो मालिक हूँ, वह मेरा अविनाशी पिता है, मैं सदैव उसी का हूँ ही।—यह भूल जाता है। परिणाम क्या होता है ? बाबा ने जो हमें यह सब मनोरंजन के साधन दिये हैं—इनमें समय प्रति समय परिवर्तन भी ड्रामा में नूँध है। चलते-चलते जिज्ञासुओं के टूट पड़ने का कारण यही होता है कि उनका सीधा सम्बन्ध अपने लक्ष्य की तरफ तो होता नहीं और जब इन सुविधाओं में से कोई भी अपना स्थान बदल लेती है या फिर इस मार्ग पर प्राप्त नहीं होती है तो उन्हें ज्ञान को छोड़ने के संकल्प चलने लगते हैं।

अब अपने को चैक करो, मुझे सबसे प्रिय चीज़ कौन-सी है ?हमें प्रिय हो अपना बाबा और अपना लक्ष्य !! ठीक है हमें यहाँ का पवित्र व शान्त वातावरण पसन्द आना चाहिए, टीचर बहन का ज्ञान समझाने का तरीका अच्छा लगना चाहिए, सेवा भी प्यारी हो, व्यर्थ के बन्धनों से छूट गये यह भी ठीक है। परन्तु इन सबका रस लेते हुए बाबा और अपना लक्ष्य सब रसों के आगे फीका न पड़ जाए।

हमारा (Pure original) स्वरूप है—शान्त, निर्बन्धन, पवित्र, इच्छा मात्रम अविद्या, देह से न्यारा—यह स्वरूप याद रखो तो यह महसूस ही नहीं होगा कि हम पहले पवित्र नहीं थे और अब बन रहे हैं या पहले निर्बन्धन नहीं थे अब बने हैं। इसी तरह बाबा के साथ हमारा सम्बन्ध भी (Natural) हो। मैं तो कल्प-कल्प की अधिकारी आत्मा हूँ। बाप का वर्सा मेरा जन्म-सिद्ध अधिकार है। इस तरह यह मार्ग बिल्कुल सहज लगेगा और हम एक रस होकर चलते रहेंगे। ⊙

सूचना

अभी तक भी कुछ सेवा केन्द्रों से ज्ञानामृत तथा वर्ल्ड रीन्यवल पत्रिकाओं के लिये सदस्यों की संख्या नहीं आई है। कृपया शीघ्र भेजें।

युवा पग यात्रियों प्रति

ब्र० कु० राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली

विश्वपति ने पहनायी माला, राष्ट्रपति ने दिया कलश,
दादी जी ने झण्डा दिया, और किया मार्ग प्रशस्त,

हम बहनें बाँधती राखी;
युवा सफलता साथ रहे !

वसुधा ने राह बिछाई, किया गगन ने साया,
शुभ लक्ष्य भरे बल, पाओ फल मन भाया,

"राखी तेरा कवच बने;
युवा सफलता साथ रहे !

दृढ़ संकल्प तेरा "सिम्बल", मर्यादाओं का बाना,
आत्मिकता का प्रकाश, साथ ज्ञान खजाना,

हम बहनों की राखी कंगन;
युवा सफलता साथ रहे !

जन-जन की आस हो तुम और वक्त का विश्वास,
परमात्म प्रीत निभाने वाले, तुझ पे वरदानों का हाथ,

बहनें "राखी" सौगात में देती।
युवा सफलता साथ रहे !

भेंट किए प्रकृति ने फूल, स्वागत करें मुस्कानों से,
भोली जनता देवे दुआएँ नैन भरे अरमानों से,

हम बहनें देतीं राखी ।
युवा सफलता साथ रहे !

यह राखी है पावनता का दर्पण,
साथी है यह, तेज करे मनोबल,

बाँधे रखना सदा इसे ।
युवा सफलता साथ रहे !

(पृष्ठ ६ का शेष)

को इसी अनुरूप चला कर देखिये, आप स्वयं अनुभव करेंगे कि कितना आनन्द मिलता है, कितनी खुशी की प्राप्ति होती है और इस खुशी, आनन्द, शान्ति के अनुभव की तुलना में ईश्वरीय मार्ग की मर्यादाओं को अपनाना कुछ भी नहीं लगेगा। जैसे शारीरिक स्वास्थ्य के लिए उपरोक्त बातों का ध्यान रखना अथवा उनका पालन करना, हो सकता है, प्रारम्भ में किसी को कठिन लगे परन्तु जब वह इनको अमल में लाने से स्वास्थ्य-लाभ महसूस करता है तो उसे उनको आजीवन पालन करना कठिन नहीं लगता। □

परमानन्द की सुखद घड़ियाँ

ब्र० कु० सूरज कुमार, आबू

इस ईश्वरीय जीवन की वे घड़ियाँ स्मरणीय होती हैं जब आत्मा अपने सच्चे प्रियतम परमपिता के पास बहुत काल तक निरन्तर निवास करती है। कभी-कभी छोटी-छोटी बातों में उलझ कर मन इस अनुपम रस से वंचित हो जाता है। परन्तु मनुष्य के ऊँचे संकल्प व स्वयं से रूह-रिहान उसे इसका सहज ही अनुभव करा देती है। यहाँ पर ऐसे ही अनुभव को प्रस्तुत किया गया है। इस तरह के स्वचिन्तन से आत्मा सहज ही निरन्तर परमात्मा की समीपता का रस ग्रहण कर सकती है।

प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण, श्रेष्ठ ऋषियों की तपस्या के पावन तरंगों से आच्छादित, एकान्त स्थित पर्वत शिखाओं पर पहुँचते ही मन में दिव्य तरंगें प्रवाहित होने लगीं और मन प्रभु मिलन के ईश्वरीय आनन्दों में खो गया···

आबू की मन भावन पहाड़ियों से आवाज़ गूँज उठी

हे योगी···जिसने तुम्हें नव जीवन का दान दिया···जिसने तुम डूबतों को पार लगाया···उसे तुम क्यों भल जाते हो !

धीमी गति से मन में प्रवाह उठा

जिसने तुम्हें हँसना सिखाया, तुम्हारे दुखों के आँसू पोंछे और तुम्हें कहा कि "तुम मेरे हो"··· उसे तुम कैसे भूल जाते हो !!

हे प्राणी···जिसने तुम्हारी तूफान ग्रस्त नैया को किनारा लगाया···जिसने तुम्हें माया के भीषण प्रकोप से बचाया···जिसने तुम्हें माँ बनकर अपनी शीतल गोद में बिठाया···उसे भूलकर तुम किसे याद करते हो !!

और इन विचारों से मन पूर्णतया शान्त हो गया। कुछ क्षण के लिए मानो आत्मा, परमात्मा के प्यार में समा गई।

पुनः सुखदाई संकल्प मन में प्रवाहित होने लगे

हे मानव···जिससे मिलने की तुझे कई जन्मों से इन्तजार थी, जिससे क्षणिक बातें करने के लिए तुम नयन बिछाए रहते थे, वह इन्तज़ार तो तुम्हारी पूर्ण हो गई···अब तुम्हें और किन घड़ियों की इन्तज़ार है···तुम कहते थे कि बस दिल में एक ही इच्छा है कि सदा तुम्हारे साथ ही रहूँ···तब तुझे कुछ भी ज्ञान नहीं था और अब सम्पूर्ण ज्ञान है, तो क्यों नहीं सदा ही तू उसके साथ रहता···यदि तू सब कुछ जानकर भी उसके साथ नहीं रहेगा तो भला और कौन रहेगा···

और ऐसा ही प्रतिभासित होने लगा कि मैं अपने उस प्यारे प्रियतम के पास ही बैठा हूँ। आह···कितना आनन्द है, इस मिलन में, इस मिलन की गाथाओं से शास्त्र भरे हुए हैं, ऋषिगण इस मिलन के लिए कष्ट सहन कर रहे हैं, तो क्यों न मैं सदा ही ये मिलन मनाता रहूँ···

फिर ईश्वरीय महावाक्य कानों में गूँजने लगे

"बच्चे, बाप तुम्हारा सदा का साथी है, वह सदा ही साथ निभा रहा है"। तो दिल कहने लगा···जो मेरा साथ दे रहा है, मैं क्यों न सदा ही उसके साथ रहूँ···उसने मेरे लिए सारे खज़ाने खोल दिये हैं, क्यों न मैं उससे सब कुछ प्राप्त कर लूँ···जो बाप मेरा रोज़-रोज़ शृंगार कर रहा है, क्यों न मैं उसकी छवि नयनों में समा लूँ···यदि अथाह खज़ाने होने पर भी मैं अतृप्त ही रह गया तो चारों युगों में भला तृप्ति कब होगी···यदि भगवान को पाकर भी सन्तोष न हुआ तो कब होगा···

बच्चे, भक्ति में तुमने कहा था कि हे ! प्रभु जब कभी आप इस धरा पर आओ तो कृपया हमें भी अपने आने की खबर देना। और हो सके तो हमें स्वीकार कर लेना। अब देखो, उसने हमें स्वीकार

भी कर लिया और कहा—"तुम मेरे नयनों के नर हो।" परन्तु वह स्वयं भी हमारा हो गया, उसने कहा—"बच्चे, मैं भी तुम्हारा हूँ"। आह···जिसकी कल्पना भी न की थी, वह साकार हो गया···

मन अथाह खुशियों में नाच उठा, ओह··· भगवान मेरा हो गया और मन से आवाज़ निकली—वाह बाबा, हम तो सोचते थे, हे भगवन आप ऐसे होंगे···आप कसे होंगे, पता नहीं कैसे होंगे, परन्तु तुम तो हमारे ही निकले···

पुनः कुछ क्षण के लिए मन आनन्दों में खो गया। स्थान व समय की भी अविद्या हो गई। मन उस रस को चखते-चखते तल्लीन अवस्था में पहुँच गया।

कुछ ही क्षण बाद अति प्रेरणा भरे संकल्प पुनः जागृत हुए

हे राही—क्या तू अपना वायदा भूल गया—तूने कहा था कि जब तुम आओगे, हम तुम्हारे ही साथ रहेंगे तो क्यों नहीं तू अपने उस परम प्रियतम शिव बाबा की याद में मग्न हो जाता···जब तुझे पता है कि इस याद से तू अपनी मंज़िल पर पहुँचेगा···इसी से तेरी कंटक पथ की यात्राएँ सुखद होंगी···इसी से तू सूर्य समान बनकर समस्त विश्व को प्रकाशित करेगा—इसी से तू कोटि-कोटि आत्माओं का विघ्न विनाशक बनेगा···

हे प्राणी—तू अपने मन में क्यों नहीं अपने उस प्राणनाथ को समा लेता, जिसे मिलने की तुझे हजारों वर्षों से तड़फन थी और जो अनेक जन्मों की तपस्या के बाद तुझे मिला है···तू भला पल भर भी उससे जुदा क्यों होता है···जबकि तुझे पता है कि उससे दूर होते ही संसार उलझनों भरा है, उसे भूलते ही चहुँ ओर माया का जंजाल है, उससे किनारा करते ही जीवन दुखमय है। क्यों नहीं तू प्रतिपल उससे ही बातें करता···जिससे क्षण भर बातें करने को ही तू सर्वोच्च भाग्य समझता था। क्यों नहीं तू उसके प्यार में मग्न हो जाता···

मन एक बार फिर उड़ गया वहीं जहाँ उसका प्यारा है। और बार-बार अपने परमपिता की शुक्रिया करने लगा, जिसने इतना एहसान किया है, इतना सब कुछ दिया है कि पूरे 21 जन्म ही सुख से बीतेंगे, कोई भी अभाव नहीं होगा, कोई भी खोज नहीं होगी और कहीं भटकन भी नहीं होगी।

और फिर मन में मानो कोई कह रहा हो

हे योगी, तुम याद करो, तुम्हारा परम मित्र तुमसे कितनी मित्रता निभा रहा है···मित्र होने के नाते जो भी अधिक से अधिक वह तुम्हारे लिए कर सकता है, कर रहा है···तो क्या तुम भी उसके मित्र होकर वह सब कुछ कर रहे हो, जो तुम कर सकते हो···क्या तुम उसकी दोस्ती का सम्पूर्ण लाभ उठा रहे हो ?

हे सज्जन प्राणी···जिसने अनेक वरदानों से तुम्हारी झोली भरी, जिसने तुम्हारी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण कीं···जिसने तुम पर अपार सुख बरसाये···तुम्हारे काज सँवारे···तुम्हारी लाज रक्खी···उसे तुम कैसे भूल जाते हो···

और मन कह उठा

हे मेरे परमपिता शिव बाबा, तुम्हारी दोस्ती पर मुझे गौरव है···मैं इस दोस्ती का ऋण अवश्य चकाऊँगा···मैं तुम्हारी आशाओं का दीपक हूँ, जग को आलोकित करूँगा···मुझे पूर्ण एहसास है कि तुम मुझे बहुत प्यार करते हो···मुझे पलकों में छुपाये रहते हो···मुझे बल देते हो···मेरे प्रत्येक श्रेष्ठ संकल्प को पूरा करते हो···मैं भी आपका प्रत्येक संकल्प पूरा करूँगा···तुम्हें जग में प्रत्यक्ष करूँगा···

प्राण-प्यारे शिव बाबा

कभी वे दिन थे, जब हम तुम्हारी खोज में भटकते थे, सत्य को जानने के लिए लालायित रहते थे···और अब···अब वे दिन हैं, जब हम सदा ही तुम्हारे साथ रहते हैं···तुम्हारी प्रत्येक दिव्य लीला को देखते हैं···तुम्हारी ही छत्रछाया में रहते हैं···तुम्हारे ही प्यार में पलते हैं···

(शेष पृष्ठ २४ पर)

मनसा-सेवा

ब्र० कु० रमेश शाह, गामदेवी, बम्बई

5000 वर्ष के इस सृष्टि चक्र का सम्बन्ध पूर्ण रूप, से इस संगमयुग के साथ है। जो भी बातें जिस-जिस तरह इस छोटे कल्याणकारी संगमयुग में होंगी, वे फिर सारे कल्प में भिन्न-भिन्न नाम रूप देश-काल में होंगी। इस सृष्टि चक्र को चार समान युगों में बाँटा गया है और हरेक युग की आयु 1250 वर्ष की है। उसी तरह संगमयुग में भी 4 लघु-युग हैं और हरेक युग की अपनी-अपनी विशेषता और विस्तार है। संगमयुग का प्रारम्भ माना ही परमपिता परमात्मा का दिव्य अवतरण और इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थापना। स्थापना सन् 1937 में हुई। सृष्टि चक्र के अन्दर जैसे हम बच्चों को सिखाया गया है कि ईसाई धर्म को अवधि 2000 वर्ष की है अर्थात सन् 1937 से सन् 2000 तक करीब 64 वर्ष होते हैं और इसको 4 समान हिस्सों में विभाजन करते हैं तो हरेक भाग के 16 वर्ष होते हैं। सतयुग से कलियुग, सतो-प्रधान से तमोप्रधान या उतरती कला का प्रतीक है और यह 16 वर्ष का प्रत्येक हिस्सा चढ़ती कला का या ज़ीरो से हीरो बनने-बनाने का समय है।

सबसे पहिले 1937 से 1952 तक स्थापना का कार्य चला। भट्ठी बनी और कई बहन-भाई आकर के इस यज्ञ में समर्पित हुए। हैदराबाद से-कराची-से-माउन्ट आबू तक की यात्रा हुई और फिर 1953 से 1968 तक सेवाकेन्द्रों की स्थापना का कार्य चला। भारत के विभिन्न स्थानों पर ईश्वरीय ज्ञान तथा राजयोग का अभ्यास कराने अर्थ ये सब समर्पित बहन-भाई गये। सृष्टि चक्र में आधा कल्प है ब्रह्मा का दिन और आधा कल्प है ब्रह्मा की रात्रि। उसी तरह इस 64 वर्ष में आधा अर्थात 32 वर्ष ब्रह्मा बाबा का पार्ट साकार में चला तो आधा समय अव्यक्त रूप से चलेगा। 32 वर्ष साकार पालना हम बच्चों को मिली तो बाद के 32 वर्ष अव्यक्त माता-पिता बापदादा द्वारा पालना होगी।

सन् 1969 से अव्यक्त रूप में पालना रूपी सेवा का विशेष युग शुरू हुआ। सेवा का विस्तार बेहद अर्थात भारत के बाहर भी होने लगा। विहंग मार्ग के साधनों की संख्या बढ़ती गई। सेवाकेन्द्रों के रूप भी बदले। ज़ोन्स आदि को रचना हुई। मेले, कान्फ्रेंस आदि के द्वारा देश-विदेश में जन-जन को सन्देश मिलने लगा। सेवा में वाचा की शक्ति का प्रयोग विशेष रहा। यह हुआ तृतीय चरण।

अब सन् 1985 से अन्तिम चरण का प्रारम्भ हुआ है। इसी हिस्से में विश्व-परिवर्तन का कार्य समाप्त होगा और उसके लिये जो भी करना-कराना है वह करन-करावनहार द्वारा यहाँ पर होगा। विज्ञान ने जैसे अब यात्रा के लिये विहंग मार्ग के साधन दिये हैं उसी तरह शान्ति की शक्ति, योग की शक्ति के सफल प्रयोग होंगे। महात्मा गांधीजी ने भारत को आजादी दिलाने के लिये दांडी-कूच नाम की पदयात्रा करके क्रान्ति लाई। भूदान रूपी माध्यम द्वारा गाँवों में जागृति और उन्नति के प्रयोग किये गये। उसी तरह अब तक हो रहे आध्यात्मिक सन्देश देनेवाले साधनों और साधना में परिवर्तन होगा। शान्ति की क्रान्ति का जन्म देनेवाले, ग्रामीण भोली-भाली जनता को इस कार्य में संलग्न करने के लिये पदयात्रा का कार्यक्रम शुरू हुआ है। सन् 1964 में पहली विश्व-नवनिर्माण प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। बाद में उसी के अनेक रूप हुए— जैसे कि प्रोजेक्टर, स्लाइड-शो, संग्रहालय, केलेन्डर्स, मेले, किताबें आदि-आदि। उसी तरह से इस पदयात्रा के प्रयोग और उपयोग में अनेक प्रकार के संशोधन होंगे। पदयात्रा, साइकिल-यात्रा, वाहन-यात्रा, मिनी-यात्रा, सम्मेलन, ग्रामोद्धार-प्रदर्शनी, किताबें आदि-आदि का आयोजन होगा और क्रान्तिकारी परिवर्तन भी होगा। भोलानाथ शिव-भोला भंडारी की भोली ग्रामीण प्रजा जब

विश्व-परिवर्तन का सन्देश सुनेगी तब ही जो प्यारे बाबा द्वारा कहा गया है माउन्ट आबू से आबूरोड तक लाइन लगेगी, यह बोल सिद्ध होंगे। और कर्मणा और वाणी के माध्यम द्वारा जो सेवा हो रही है उसी के साथ-साथ मन्मनाभव का महान सन्देश देने अर्थ मनसा सेवा का नवीनतम प्रयोग करने का सन्देश हमें मिला है। ईश्वरीय सेवा के विस्तार में जो नये-नये साधन मिले हैं उसी के प्रयोग अर्थ हम विशेष तैयारी करते हैं, विशेष ट्रेनिंग दी जाती है ताकि उस साधन के उपयोग सही तौर पर किये जाएँ और परिणाम भी सुन्दर हों। उसी रीति से मनसा सेवा के अर्थ विशेष तैयारी की जरूरत है। इस लेख में मनसा सेवा के पहले साधन की चर्चा करेंगे।

जैसे मनसा सेवा नाम ही संकेत करता है कि मन के द्वारा, संकल्पों के द्वारा, मनन-शक्ति द्वारा यह सेवा होगी। तो सबसे पहले इस साधन मन-संकल्प की शुद्धि की जरूरत है। संकल्पों, तरंगों (Vibrationes) द्वारा अन्य आत्माओं की सेवा करना है तो यह तरंग और संकल्प शुद्ध और कल्याणकारी हों। वरदानी संकल्प हों, शक्तिशाली संकल्प हों। रुहानियत और रुहानी-बल प्रदान करने वाले यह संकल्प हों। संजीवनी जड़ी बूटी समान शुद्ध श्रेष्ठ संकल्प अन्य के वरदान रूप बनने वाले हैं। वरदानी मूर्त बनकर वरदानों की झोली से सारे सृष्टि में सभी आत्माओं को भरपूर करना है।

संकल्प एक शक्ति है। धन, विद्या, शारीरिक बल आदि शक्ति हैं ऐसे ही संकल्प भी सर्वश्रेष्ठ शक्ति है। धन रूपी शक्ति से दान आदि अच्छे कर्म हो सकते हैं तो बुरे कर्म में अर्थात शराब, जुआ आदि में भी धन लगाया जा सकता है। शक्ति के सुखद या दुखद, पाप या पुण्य के प्रयोग करने वालों के ऊपर है। उसी छुरी से सब्जी आदि काट सकते हैं तो किसी का गला भी काट सकते हैं। कसूर छुरी का नहीं लेकिन उसके प्रयोग करनेवाले पर है। योगी जीवन में वचन-सिद्धि तथा संकल्प-सिद्धि आ जाती है। वचन-सिद्धि के कारण वरदान या श्राप के रूप में प्रयोग उसी के करने वाले के ऊपर है। इसीलिये मनसा सेवा के लिये संकल्प करने वालों की पवित्रता, शुभ भावना का स्रोत जरूरी है। दया और शुभ संकल्पों का भण्डार सदा ही गंगा समान बहता रहे। नदी तो क्या सागर बनना जरूरी है। तब ही इन पवित्र शुद्ध संकल्पों द्वारा विहंग मार्ग की अन्तिम चरण की अति फल-दायी, उड़ती कला के प्रतीक समान ईश्वरीय सेवा होगी।

पदयात्रा द्वारा व्यापकता और बहुजन सम्पर्क बढ़ेगा और मनसा सेवा द्वारा इस 1985 से शुरू हुए विशेष उड़ती कला या साधना के युग में स्वयं भी सम्पूर्ण और औरों को भी सदा वरदानी स्व-र्गीय सुख के अधिकारी बनायेंगे। तो याद रहे अब हमेशा शुभ, पवित्र, दया, परोपकारी भावना से भरपूर हमारे जीवन का हर पल हो। यही पवित्र श्रेष्ठ संकल्प मनसा सेवा का आधार है।

अगले लेख में मनसा सेवा की विधि के बारे में विचार करेंगे।

★

परमानन्द की····· (पृष्ठ २२ का शेष)

मेरे प्राण-प्यारे, तुमने हम पर जो एहसान किया है, वह भला कैसे भुलाया जा सकता है। ये तुम्हारी दोस्ती व पुनीत प्रेम···हमारे जीवन का आधार है। हम मन से तुम पर बलिहार हैं, प्राणेश्वर···

और इस तरह, बहुत समय प्रभु-मिलन के अलौकिक आनन्दों में बीत गया। मन पूर्णतया शान्त व आनन्दित हो चुका था, मानो उसे वह सब कुछ मिल गया, जिसकी उसे चाह थी। और इसके बाद यही प्रवाह कई दिनों तक मन को उस परम प्रियतम की अलौकिक छवि से लुभाता रहा।

"रक्षा बन्धन"

ब्रह्मा कुमारी आरती, भादरा, राजस्थान

भारत एक प्राचीन खण्ड है जिसमें प्राचीनकाल से लेकर अभी तक हुए प्रत्येक कृत्य की याद में उत्सव मानाये जाते हैं । कभी परमपिता शिव का आवतरण दिवस महाशिवरात्रि, कभी देव महान् श्री कृष्ण जन्माष्टमी तो कभी रामनवमी, कभी महावीर जयन्ति, कभी बुद्ध जयन्ति तो सिक्ख भाइयों के दस गुरुओं में से किसी की जयन्ति मनाई जाती है । इन जयन्तियों के अलावा और भी बहुत से त्यौहार जैसे होली, दिवाली, दशहरा, ईद, मुहर्रम, क्रिसमस इत्यादि सभी धर्मों के लोग मिल कर मनाते हैं । परन्तु इन सभी त्योहारों से अनूठा एक और उत्सव है जो न तो किसी जयन्ति से सम्बन्धित है और न ही किसी विजय, राजतिलक समारोह या राक्षस के संहार का प्रतीक होली जैसी ही कोई यादगार है,—इसके मनाने का ढंग भी बेहद अलौकिक है ।

यह है रक्षा बन्धन: यूं तो बन्धन शब्द दु:ख का प्रतीक है । संसार में कोई भी प्राणी बन्धन में बन्धना नहीं चाहता—भले ही वह, बन्धन सोने की जंजीर ही क्यों न हो, परन्तु कमाल है इस अनोखे बन्धन की जिसमें बन्धने के लिए प्रत्येक भाई उत्सुक होता है और कितने अनोखे ढंग से इस बन्धन की रस्म अदा की जाती है । प्रत्येक भाई दूर से चल कर अपनी बहन के इस बन्धन में बन्धने के लिए आ जाता है या अति दूर होने पर बहिन की राखी का इन्तजार करता है, परन्तु ये रस्म आखिर किस कृत्य की यादगार हैं ?

आज तो रस्म केवल इतनी ही है कि बहिन बढ़िया सी राखी भाई की कलाई पर बांध देती है और भाई बदले में उसे पैसे दे देता है परन्तु इस छोटी-सी रस्म में क्या रहस्य भरा है ? आज यह मान्यता प्रचलित है कि बहिन भाई को राखी बांध कर उससे अपेक्षा करती है कि जब भी कभी मेरी लाज को खतरा हुआ तो आपकी कलाई मेरी रक्षा करने में सदा समर्थ सिद्ध हो । और बदले में भाई भी यह प्रतिज्ञा करता है कि "जब तक मेरी जान में जान है तब तक मेरी बहिन की आन है" इसी प्रण से खुश होकर बहिन भाई का मुख मीठा करा देती है और भाई बदले में यथा शक्ति खर्ची दे देता है ।

इस प्रकार हर वर्ष भारत वर्ष की हजारों नारियां अपने भाईयों को राखी बांध उनसे रक्षा की प्रतिज्ञा लेती हैं परन्तु . . . तनिक विचार कीजिये क्या भारत में प्रत्येक नारी स्वयं को सुरक्षित अनुभव करती है ?

यदि प्रत्येक भाई बहिन की रक्षा का प्रण करता है तो फिर आये दिन जो नारी की लाज लूटने के घिनौने समाचार सुनने व पढ़ने को मिलते हैं वे लुटेरे आखिर कौन हैं ?

यदि विदेश में बैठी बहिन भारत में अपने भाई को डाक द्वारा राखी भेज देती है तो क्या उसके संकट के समय भाई उसकी रक्षा के लिए पहुंच सकता है ? यदि नहीं तो फिर ये आडम्बर क्यों ? क्या रक्षा का फर्ज़ उसी राखी बांधने वाली बहन तक ही सीमित है ?

कोई भी भाई यह नहीं चाहता कि उसकी बहन की तरफ कोई बुरी नजर से देखे, परन्तु अन्य किसी भाई की बहिन से अभद्रतापूर्ण व्यवहार करने की छूट फिर उसे किसने दी ?

यह सर्व विदित सत्य है कि आक्रमण करने वाले को दूसरी तरफ से प्रत्युत्तर अवश्य मिलेगा । तो फिर अन्य भाइयों की बहिनों की लाज लूट कर अपनी बहिन की सुरक्षा की अपेक्षा करना कहां तक तर्क संगत है ? और यह कहां तक सम्भव है ?

अपनी बहन से राखी बन्धवा कर क्या हर भाई का समस्त नारी जाति की रक्षा का फर्ज नहीं बनता ? भले ही वह बहिन आपकी मां की सन्तान नहीं परन्तु वह भी किसी भाई की बहिन तो है ही !

तो रक्षा किसकी कैसे और रक्षा का कर्त्तव्य कहां तक सीमित है ? यह समझने की आवश्यकता है ? यदि अपने-आप से प्रश्न करोगे तो स्वयं ही हल ढूंढ सकते हैं । इतिहास साक्षी है कि राजपूत रानी ने मुगल सम्राट हुमांयू को राखी भेज कर सहायता के लिए बाध्य कर दिया । तो यदि एक मुसलमान भाई राजपूत बहिन की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व लगा सकता है तो क्या आज के भाई रक्षा का वह कर्त्तव्य नहीं निभा सकते ?

इस वृतान्त से यह सिद्ध होता है कि रक्षा का कर्त्तव्य केवल अपनी बहिन तक सीमित नहीं है—बल्कि वह प्रत्येक नारी को जिस प्रकार की रक्षा की आवश्यकता है उसके लिए सदा तत्पर रहें ।

उपरोक्त कुछेक प्रश्न-चिन्हों को देख पाठकगण उलझ गए होंगे तो आइये आज हम रक्षा-बन्धन के वास्तविक रहस्य पर विचार करें:

"राखी अथवा रक्षाबन्धन का प्रारम्भ कब हुआ"?

राखी केवल बहिनें ही भाई को नहीं बांधती परन्तु ब्राहमण भी

यजमान को बान्धते हैं । तो फिर यह तो केवल एक भ्रम है कि बहिन भाई से रक्षा की कामना करती है क्योंकि शक्ति शब्द ही नारी का प्रतीक है । कहते हैं जब-जब विश्व पर संकट आया तब-तब शिव ने शक्ति को भेजा,—संकट टालने के लिए । फिर भला वह शक्ति पुरुष से रक्षा की कामना क्यों करेगी ?

वैसे भी शास्त्रों के नियम के अनुसार यदि शारीरिक रूप से नारि को रक्षणीय माना भी जाता है तो उसकी रक्षा का दायित्व बचपन में पिता पर, विवाहोपरान्त पति पर तो वृद्धावस्था में पुत्र पर होता है । फिर वह इन सभी के बजाय भाई को ही राखी क्यों बांधे ?

इतिहास साक्षी है कि युद्ध के समय बहिनें अपने योद्धा भाइयों की कलाई पर राखी बांध कर देश की रक्षा के लिए प्रेरित करती हैं तथा शुभकामनाएं करती हैं । तो जरा विचार कीजिए उस समय रक्षा की आवश्यकता बहिन को है या भाई को ? वास्तव में यहां "बन्धन" शब्द प्रतिज्ञा का प्रतीक है और रक्षा मनोविकारों से बचाव का प्रतीक है । इस संसार में घोर कलियुगी नरक के समय पर जब सभी आत्माऐं विषय-विकारों में फंस कर दु:खी और अशान्त होती हैं तो सभी परम रक्षक, परमपिता परमात्मा को पुकारती हैं । अपने बच्चों की करुण पुकार सुन कर स्वयं प्रभु आते हैं और आकर प्रजापिता ब्रहमा मुख द्वारा अपनी गोद के बच्चे यानि मुख वंशावली ब्राहमण बनाते हैं, जो उस पिता के समक्ष स्वंय भी पवित्रता की प्रतिज्ञा करते हैं तथा अन्य आत्माओं को इसके लिए प्रेरित करते हैं । इसीलिए नामधारी "ब्राहमण" आज भी यजमानों को राखी बांधते हैं ।

इस कार्य में मातऐं और बहिनें ही अग्रसर होती हैं इसलिए आज भी बहिनें भाइयों को राखी बांधती हैं । वैसे भी आज कलियुग अन्त में यदि पवित्रता का कोई अंश बचा है तो केवल भाई बहिन के सम्बन्ध में ही है और यह बन्धन तो है ही पवित्रता की प्रतिज्ञा का । इसीलिए इस त्यौहार को भाई बहिनों का त्यौहार कहा जाता है ।

रक्षा बन्धन का वास्तविक रहस्य:

रक्षाबन्धन का धागा हमें सदा पवित्रता की स्मृति दिलाता रहता है । जिसमें हमारे मन के विचार मुख के बोल, दृष्टि, सुनना कोई भी विषय-विकारों के वशीभूत नहीं हों ।

कहते हैं,—यह धागा दशहरे के दिन तक बन्धा रहे अर्थात् जब तक हम दस विकार: पांच विकार स्त्री के "काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार" और यही विकार पुरूष के समाप्त नहीं कर लेते अर्थात् इन दसों पर विजय प्राकर विजयदशमी नहीं मना लेते तब तक इस पवित्रता के व्रत की आवश्यकता है और इसके बाद तो जीवन स्वत: ही पवित्र बन जाता है । अत: किसी बन्धन की आवश्यकता ही नहीं रहती ।

राखी बांधते समय जो तिलक लगाया जाता है उसका भी अपना ही महत्व है । यह तिलक आत्मिक स्मृति का प्रतीक है । पवित्रता की धारणा आत्मिक स्मृति में स्थित हो कर ही की जा सकती है ।

मुख मीठा कराने का अर्थ सदा मधुरता एवं मंगलमय जीवन से है । खर्ची स्थूल धन नहीं "बुराईयों" की है जो हमें इस राखी के उपलक्ष पर देनी है ।

तो आओ ! . . . आज हम सभी आत्मारुपी भाई परमपिता परमात्मा के समक्ष पवित्रता की प्रतिज्ञा करके राखी के रहस्य को जान कर रक्षा का बन्धन बांधें !

दिल्ली-पश्चिम बिहार में पद यात्रा की समाप्ति समारोह के अवसर पर ब्र०कु० देवकी चौ० भरत सिंह (संसद सदस्य) को ईश्वरीय सौगात देते हुए ।

मेरठ सेवा केन्द्र की ओर से भवाना तहसील में हुए कार्यक्रम में भ्राता सन्दर लाल जी प्रवचन कर रहे हैं।

दक्षिणी दिल्ली, खानपुर में भारत एकता युवा पद यात्रा का स्वागत करते हुए भ्राता रामजीलाल जी, सदस्य नगर निगम।

दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित एक 'युवा पद यात्रा' के दौरान नरेला में एक कार्यक्रम का दृश्य। ब्र०कु० प्रेम प्रकाश जी पद यात्रा का उद्देश्य बता रहे हैं।

त्रिनगर-दिल्ली सेवा केन्द्र की ओर से दो दिवसीय भारत एकता पद यात्रा के पुंठकलां गांव में पहुंचने पर गांव वासियों का समूह ईश्वरीय सन्देश सुनते हुए

उत्तरी दिल्ली में निकाली गई पद यात्रा का एक दृश्य

पूर्वी-दिल्ली में शाहदरा सेवा केन्द्र से निकाली गई युवा पद यात्रा का फलैग आफ भ्राता कृष्ण लाल, सदस्य नगर निगम ने किया। ब्र०कु० कमला उन्हें आत्मस्मृति का टीका देते हुए

पूर्वी दिल्ली में पद यात्रा का लक्ष्मी नगर सेवा केन्द्र से आरम्भ किया गया। भ्राता टी.सी. जैन फलैग आफ करते हुए

बम्बई अंबरनाथ सेवा केन्द्र की ओर से चौरण नाट्य गृह में कल्याण नगरपालिका अम्बरनाथ शाखा के सहायक आयुक्त भ्राता मोरलेकर ी राजयोग प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए

बरासत (कलकत्ता) में युवा जागृति प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् भ्राता तरुण कान्ति, संसद सदस्य तथा दादी संतरी जी अन्य ब्र०कु० भाई बहिनों के साथ उपस्थित हैं।

इन्दौर छावनी संयोगिता गंज में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन महापौर जी कर रहे हैं।

भावनगर सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित 'ग्रामय सेवा पदयात्रा' शुभेच्छा समारंभ में ब्र०कु० विष्णु भाई विद्यालय का परिचय देते हुए।

बड़ौदा सेवाकेन्द्र की ओर से वाघोडिया गांव में हुई प्रदर्शनी का उद्घाटन करती हुई भगिनी व्रजलता बहन बहुजी।

अलिंस ब्रिज-अहमदाबाद सेवा केन्द्र पर योग साधना आश्रम के डायरेक्टर स्वामी मनुवर्य जी पधारे। ज्ञान चर्चा करती हुई ब्र०कु० शारदा जी।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० लक्ष्मण, सत्यनारायण, कृष्णा नगर, देहली द्वारा संकलित

भारत के कोने में भारत एकता युवा पद यात्राएँ

कटक—समाचार मिला है कि "भारत एकता युवा पद यात्रा" जो कि पुरी से दिल्ली पहुंच रही है, के आगमन पर "युवा उत्थान आध्यात्मिक सम्मेलन" २६-६-८५ को आयोजित किया गया। इसमें भ्राता डी० पाठक जी, मुख्य न्यायाधीश; भ्राता शरत रावत, राज्य-मंत्री (योजना-सूचना, समन्य, लोक सम्पर्क विभाग) तथा शहर के अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। १३ प्रैस रिपोर्टर भी उपस्थित थे—पदयात्रा का समाचार वहां के रेडियो तथा अखबारों द्वारा भी जन-जन ने क्रमशः सुना पढ़ा।

पणजी (गोवा)—समाचार मिला है कि वहां के आकाशवाणी द्वारा "युवा शक्ति का दिव्यीकरण" विषय पर ब्र० कु० शोभा बहन का प्रवचन प्रसारित किया गया। सेवा केन्द्र द्वारा निकटवर्ती ग्रामों में भी प्रदर्शनी तथा "युवा स्लाइड शो" के कार्यक्रम रखे गए जिससे लगभग २००० आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश मिला।

जामनगर—सेवा केन्द्र द्वारा एक युवा पदयात्रा का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन वहां के कलेक्टर द्वारा किया गया। इसके द्वारा लगभग १४ गांवों में ईश्वरीय सन्देश पहुंचा। फलस्वरूप कई स्थानों से विस्तृत कार्यक्रम रखने हेतू निमन्त्रण प्राप्त हुए।

बिलासपुर—गांव-गांव में ईश्वरीय पैगाम देने हेतू एक पदयात्रा का आयोजन किया गया। इसमें लगभग १०० युवा भाई-बहन शामिल थे। "राजयोग द्वारा व्यसनों से छुटकारा" विषय पर विशेष प्रवचन चले जिसके फलस्वरूप उपस्थित लोगों में से अनेकों ने व्यसनों को छोड़ने की प्रतिज्ञा करते हुए अपनी जेबों से बीड़ी, सिग्रेट, तम्बाकू आदि निकाल कर फेंक दिया।

दिल्ली के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों में पद यात्राओं की धूम

युवा वर्ष में "भारत एकता युवा पदयात्रा" के अन्तर्गत दिल्ली की सात अलग-अलग दिशाओं में २-२ दिवसीय पदयात्राएँ २९ जून, ३० जून १९८५ को निकाली गई। हर दिशा को जाने वाली पदयात्रा समूह में ४०-५० युवा भाई बहन शामिल थे। पदयात्रा के गांव-गांव में पहुंचने पर प्रदर्शनी, प्रवचन आदि द्वारा ईश्वरीय सन्देश दिया जाता तथा व्यसनों को छोड़ने हेतू उपस्थित जन-समूह से प्रतिज्ञा पत्र भी भरवाए जाते। इन पद यात्राओं के फलस्वरूप लगभग १३२ गांवों में, लगभग ४ लाख आत्माओं को सन्देश दिया गया। १३००-१४०० लोगों ने बुरे व्यसनों को छोड़ने हेतू प्रतिज्ञा पत्र भरे। इन पद यात्राओं की एक संक्षिप्त रिपोर्ट आकाशवाणी द्वारा भी प्रसारित हुई तथा समाचार पत्रों में भी पद यात्रा के समाचार प्रकाशित हुए।

विशेष कर युवा भाई-बहनों के लिए यहां के चार सेवा केन्द्रों पर एक दिन विशेष योगशिविर का भी आयोजन हुआ जिसमें लगभग ६५-७० आत्माओं ने लाभ लिया।

आगरा—"भारत एकता युवा पद यात्रा" कार्यक्रम के अन्तर्गत आगरा क्षेत्र में भिन्न-भिन्न स्थानों से पद यात्राएँ निकाली गईं। मेटाडोर के चारों ओर सजाए प्रदर्शनी के चित्रों द्वारा एकत्रित लोगों को शिव बाबा का परिचय दिया गया। पद यात्रा के दौरान स्कूलों में भी ईश्वरीय सेवा हुई। इस प्रकार पद यात्राओं द्वारा आगरा के निकटवर्ती लगभग २०० छोटे-बड़े गांवों में जन-जन को ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

भरतपुर—गांव-गांव में ईश्वरीय सेवा हेतू कार्यक्रम आयोजित किए गए। ग्राम अनाह और सेवर में ईश्वरीय कार्यक्रम प्रवचन आदि के द्वारा चला जिसके फलस्वरूप वहां की कुछ माताएं नियमित रूप से ज्ञान में चल रही हैं। डीग, भोट-फतेहपुर, हेल्क (आदर्श नगर) में भी इसी प्रकार के कार्यक्रम चले।

भावनगर—शहर में आयोजित "गुजरात औद्योगिक मेला—८५" में सेवाकेन्द्र की ओर से औद्योगिक प्रदर्शनी (Industrial Exhibition) नाम से एक स्टाल सजाया

गया। इस द्वारा लगभग ५०,००० आत्माओं ने "उद्योग में योग का स्थान" बारे मार्ग प्रदर्शना प्राप्त की।

मेहसाना—युवा पद यात्रा के अन्तर्गत एक त्रिदिवसीय युवा पद यात्रा का आयोजन किया गया। लगभग १७ गांवों में ईश्वरीय सन्देश दिया गया। अनेक आत्माओं ने बीड़ी, जुआ, शराब आदि व्यसनों को त्यागने की प्रतिज्ञा ली।

पटियाला—प्राप्त समाचार के अनुसार सेवा केन्द्र द्वारा वहां के रोटरी क्लब में तथा लायन्स क्लब में प्रवचनों का कार्यक्रम चला। ब्र० कु० जगदीश जी के द्वारा "संस्था की मान्यताएं तथा राजयोग" और "Rob of Social Organizations in Communal Harmony" विषय पर प्रवचनों को सुनकर उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्ति बहुत प्रभावित हुए। सेवा केन्द्र पर भी स्नेह मिलन का कार्यक्रम रखा गया।

भुजकच्छ—तहसील नखत्राणा में आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा झांकी का कार्यक्रम चला। लगभग ४००० आत्माओं ने दिव्य सन्देश प्राप्त किया। और ३० आत्माएँ नियमित क्लास में आ रही हैं।

कटक कालेज स्क्वायर—समाचार मिला है कि अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के अन्तर्गत "भारत एकता युवा पद यात्रा" पुरी-कलकत्ता-दिल्ली के कटक पहुंचने पर स्वागत समारोह में "युवा उत्थान समारोह" का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि भ्राता श्री हरिनारायण एस० डी० ओ० तथा शहर के माननीय व्यक्तियों व उच्च पदाधिकारियों ने भाग लिया।

भुवनेश्वर—भारत एकता युवा पद यात्रा पुरी-कलकत्ता-दिल्ली के भुवनेश्वर पहुंचने पर नगर के मध्य में स्थित प्रसिद्ध श्री राम मन्दिर के सम्मुख सेवा केन्द्र के सभी बहन व भाई, नगर के गणमान्य व्यक्तियों व विशाल जन-समूह ने भव्य स्वागत किया। सेवा केन्द्र संचालिका दादी सन्देशी जी ने पदयात्रियों को विजय तिलक लगाया तथा अन्य बहनों ने पुष्पमाला व गुलाब जल छिड़क कर स्नेहपूर्ण अभिनन्दन किया। शाम को "युवा कल्याण समारोह" का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि मान्यवर राज्यपाल भ्राता विश्वम्भर नाथ पाण्डेय के कर कमलों द्वारा उद्घाटन हुआ।

सोलापुर—कलेक्टर भ्राता ब्र० कु० रत्नाकर गायकवाड जी के सोलापुर बदली होने पर बड़े-बड़े अधिकारियों की एक विशेष मीटिंग बुलाई गई इस मीटिंग में महाराष्ट्र के मुख्य मन्त्री ने अध्यक्ष स्थान ग्रहण किया। इस अवसर पर हमें भी कलेक्टर जी के द्वारा विमंत्रण प्राप्त हुआ। उस अवसर पर जितने मुख्य माननीय व्यक्ति पधारे थे उनको ईश्वरीय साहित्य व मुख्य मंत्री जी को श्री कृष्ण का चित्र भेंट किया गया।

जालन्धर—युवा वर्ष के उपलक्ष में युवकों व युवतियों के अन्दर खास आध्यात्मिक क्रान्ति लाने हेतु गांवों में व कस्बों में तथा शहर के गली-मुहल्लों में जन-सम्पर्क बनाने हेतु प्रदर्शनियों, प्रवचनों व प्रोजेक्टर शो से ईश्वरीय सन्देश दिया जा रहा है। एक मेले में भी आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गयी। इस प्रदशनी द्वारा सभी धर्मों के लोगों को ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

कोचीन (केरल)—सेवा केन्द्र के प्रथम "वार्षिकोत्सव" के उपलक्ष्य में आयोजित एक सार्वजनिक कार्यक्रम की अध्यक्षता तमिलनाडू और केरल की संचालिका ब्र० कु० शिव कन्या जी ने किया। केरल के हाई कोर्ट जस्टिस भ्राता पी० सी० बालकृष्ण मेनन और भ्राता के० एस० परिपूर्णन जी पधारे थे। इसके अलावा यहाँ के तीग गाँव में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

जम्मू—काश्मीर राज्य के लद्दाख शहर में एक आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया। मेले का उद्घाटन डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट द्वारा सम्पन्न हुआ। इस मेले को लद्दाख के बड़े-बड़े उच्च पदाधिकारियों ने देखा, वहाँ की जनता के लिए बहुत ही आकर्षण केन्द्र बना रहा। राजयोग शिविर द्वारा अनेक आत्माओं ने लाभ उठाया। अब वहाँ पर रेगुलर क्लास चालू हो गया।

मोदी नगर—सेवा केन्द्र की ओर से युवा वर्ष के अन्तर्गत भारत एकता युवा पद यात्रा का भी आयोजन किया गया। तीन दिनों में नौ गाँवों की सेवा की गयी उनसे बुराइयों का दान कराया गया। इसके अलावा मुराद नगर में ईश्वरीय सेवा केन्द्र खोला गया सबको ईश्वरीय सन्देश देने के लिए चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई जिसका उद्घाटन प्रधानाचार्य प्रभु दयाल जी ने किया।

पलवल—सेवा केन्द्र की तरफ से पलवल और होडल में दो दिन पद यात्रा निकाली गयी। इस पद यात्रा से लगभग ११ गाँवों की सेवा हुई। अनेक ग्रामवासियों को ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

मुजफ्फरनगर—सेवा केन्द्र की ओर से पचैन्डा के बाल माण्टेसरी स्कूल में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसके अलावा ग्राम दतियाना, ग्राम बरवाला, ग्राम भौरा कला, ग्राम मुडलाना आदि ग्रामों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी व प्रवचन के कार्यक्रम रखे गये।

हैदराबाद—राष्ट्रपति जी के हैदराबाद पधारने पर राजभवन में व्यक्तिगत मुलाकात हुई। उन्हों को हैदराबाद में चल रही ईश्वरीय सेवाओं के साथ-साथ देश-विदेश की सेवाओं से भी अवगत कराया गया। राष्ट्रपति जी ने माउण्ट आबू में सम्पन्न हुए "युवा महोत्सव" की बहुत ही सराहना की। "सर्व धर्म सम्मेलन" में ब्र० कु० प्रीतम बहन ने अपने भाषण में बताया कि सभी धर्मों में एकता लाने हेतु हमें पहले स्वयं को तथा स्वयं के धर्म को जानना आवश्यक है। दैहिक धर्म को छोड़ आत्मिक धर्म में टिकना होगा।

हाथरस—युवा वर्ष के अन्तर्गत हाथरस से सादाबाद तक २५ कि० मी० की पद यात्रा निकाली गयी जिसमें आगरा जोन के ४५ भाई-बहनों ने उमंग-उत्साह से पद यात्रा में भाग लिया। उमंग-उत्साह की इस पद यात्रा में एक विशेषता यह देखी कि युवाओं के जोश के साथ-साथ वृद्ध भाई एवं मातायें भी पद यात्रा में निकल पड़ीं। सबसे वृद्ध ७६ वर्ष के स्वतंत्रता सैनानी रामसिंह त्यागी भाई नारे लगाते हुए आगे बढ़े। हाथरस के बाजारों से होते हुए ग्राम गिजरौली, ग्राम मीतई, नगलाभुस, चन्दपा होते हुए सादाबाद पहुंची—ग्रामवासियों की अच्छी सेवा हुई।

डिब्रूगढ़—समाचार मिला है कि डिब्रूगढ़ से गोहाटी तक इस पद यात्रा के दौरान ५५ गाँव व शहरों की सेवा की गई। शिव सागर, जोरहाट, बोकाखान जागीरोड व खाना पाड़ा आदि स्थानों पर तो युवा यात्रा समारोह व शोभा यात्रा का भी आयोजन किया गया। ६ समाचार पत्रों में दो बार समाचार प्रकाशित हुआ। डिब्रूगढ़ रेडियो स्टेशन से सारा ही कार्यक्रम प्रसारित किया गया।

अम्बालाशहर की ओर से आजकल हर शनिवार-रविवार को २ दिन प्रदर्शनी रखी जाती है जिसमें प्यारे बाबा की भोली-भोली आत्माओं को संदेश दिया जाता है अब तब तो हमने प्रदर्शनी की हैं तेयला, ढढीया, देवीनगर, वडीघेल, छोटी घेल, राधा कृष्ण मार्कीट, सिविल हस्पताल रोड, जुलमगढ़, कन्चधर, गुरुद्वारा रोड आदि।

अलवर—सेवा केन्द्र की ओर से बहराड़ कस्बा में चार दिवसीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। यहाँ के डाक्टर, वकील, व्यापारी वर्ग एवं अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों सहित सैकड़ों आत्माओं ने इस प्रदर्शनी को देखा। ४० माताओं एवं २५ भाइयों ने ज्ञान शिविर किया। कोर्स पूरा करने के बाद अब रेगूलर क्लास भी कर रहे हैं।

गोहाटी—१७ जून से निकली 'भारत एकता युवा पद यात्रा' जब गोहाटी पहुंची तो उसका भव्य स्वागत किया गया। ९ जुलाई को खानापाड़ा में वैट्रिनरी कालेज कैम्पस में कार्यक्रम रखा गया। राजधानी दिसपुर में पदयात्रियों के पहुंचने पर गोहाटी, तेजपुर, शिलांग, बुलवाडी और तिनसुखिया सेवाकेन्द्र के भाई-बहिनों ने मिल कर श्री लक्ष्मी नारायण की चैतन्य झांकी सहित एक बहुत बड़े जलूस का रूप ले लिया। इस प्रौसेशन के गोहाटी सेवाकेन्द्र पर पहुंचने पर उपायुक्त भ्राता प्रतुल शर्मा जी ने स्वागत करते ध्वजारोहण किया। इस सारे प्रोग्राम को टेलिविजन पर १०, ११ जुलाई को दिखाया गया। १० जुलाई सायं रविन्द्र भवन में कार्यक्रम रखा।

१२ जुलाई को पदयात्रियों का मिर्ज़ा हाईस्कूल के विद्यार्थियों ने चैतन्य श्री कृष्ण के द्वारा स्वागत किया। विजय नगर में बेसिक ट्रैनिग स्कूल की छात्राओं ने पुष्पों की वर्षा कर स्वागत किया। छः गाँव, धूपधारा रंजुलि, दुदनोई, आगिया आदि २ गांवों से होती यह पदयात्रा गोलपारा १९ जुलाई को पहुंची। १९ जुलाई को गोलपारा में मारवाड़ी कालोनी में आध्यात्मिक कार्यक्रम रखा गया।

छतरपुर—सेवाकेन्द्र की ओर से तहसील गुरसराय में प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया एवं द्विदिवसीय प्रदर्शनी भी लगाई। करीब ढाई हजार जनता लाभान्वित हुई। वहाँ से सेवाकेन्द्र खोलने का निमंत्रण

भी मिला है। प्रवचन में शहर के प्रतिष्ठित व्यक्ति भी उपस्थित थे।

गुना—सेवाकेन्द्र की ओर से निकटवर्ती दो गांवों बदरवास तथा कोलारस में ७-७ दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी के पश्चात् बदरवास में लगभग ३०० भाई-बहनें तथा कोलारस में १५० भाई-बहिनें कोर्स हेतु आ रहे हैं। दोनों स्थानों पर क्लास के लिए मकान भी मिल गया है।

(पृष्ठ १ का शेष)

विधान जानने के लक्ष्य से माउण्ट आबू आया था। मेरा यहाँ आना फलीभूत हुआ तथा मुझे प्राप्ति का अनुभव हुआ। यहाँ के वातावरण की शान्ति एवं एकरसता के साथ-साथ मुझे यहाँ एक ऐसी शक्ति का अनुभव हुआ जो केवल परमात्मा की ही हो सकती है। मैं स्वयं को एक पावन आत्मा समझने लगा हूँ।

दयानिधि श्री चन्दन, रेडियो प्रोग्राम प्रोड्युसर, कटक—ब्रह्माकुमारी विद्यालय की भारत एवं विदेश में स्थित शाखाओं प्रति मेरी शंकाओं का समाधान हुआ। शिविर की शिक्षाओं एवं आश्रम के वातावरण ने मुझे राजयोग की फिलासाफी समझने व स्वीकार करने में प्रभावित किया।

इना कैसल, जौहरी, कनाडा—मुझे यहाँ आकर गहन आत्मिक शान्ति, आनन्द एवं सन्तुष्टता की अनभूति हुई। मुझे यहाँ शिव बाबा से सम्बन्ध जुटाने का गहरा अनुभव हुआ। विशेषतया प्रातः-काल के समय। योग में शिव बाबा से शक्ति प्राप्त करने का भी विशेष अनुभव हुआ। १८ वर्ष की तलाश के बाद मुझे अपना असली घर मिल गया है। यहाँ आकर मुझे परमात्मा शिव के साथ सर्व सम्बन्धों का अनुभव भी हुआ।

जगन्नाथ मिट्टू, मेरिन इन्जीनियर, बरनाला—मैंने पूरे विश्व का भ्रमण किया है। मैं अपने अनुभव के आधार से ब्रह्माकुमारी आश्रम को विश्व का आठवाँ आश्चर्य कह सकता हूँ। यहाँ की शिक्षा, यहाँ के स्टाफ की समर्पणमयता, यहाँ का शान्त पावन वातावरण सराहनीय है। मैं भारत की सेवा करना चाहता हूँ परन्तु कैसे? यह मार्ग-दर्शन मुझे अब मिला है। मैं शिव बाबा की सेवा में जीवन सफल करने की आशा लेकर जा रहा हूँ, पुनः वापिस आने के लिए।

बाबूलाल चन्दक, वकील, सूरतगढ़—राजयोग के प्रवचनों से मुझे जीवन मार्ग में एक सही दिशा का अनुभव हुआ है। इस राजयोग के माध्यम से मानव अपनी सही एवं वास्तविक स्थिति को पहचान कर परमपिता के धाम पर आसानी से पहुँच सकता है। इस विश्वविद्यालय की निर्लोभ सेवा एवं कुशल प्रबन्ध से भी मैं बहुत अधिक प्रभावित हुआ हूँ। मैं आशा करता हूँ कि विश्व में शान्ति की स्थापना के कार्य में इस विश्वविद्यालय का प्रमुख सहयोग रहेगा।

रजनी मैन्दोला, विश्वविद्यालय की छात्रा, जयपुर—मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि भारत-वर्ष में इस प्रकार का आध्यात्मिक विद्यालय होगा तथा इस प्रकार के ज्ञान की शिक्षा दी जाती है। यहाँ आकर मुझे जिस प्रकार की शान्ति, आनन्द की प्राप्ति हुई इससे पहले कभी भी नहीं हुई। यहाँ आकर मैं एकदम तनाव मुक्त तथा इस लौकिक दुनिया से परे हो गई। योग से मेरे दिमाग को शान्ति मिली तथा दिमाग सन्तुलित हुआ। मेरे तीन दिन के अनुभव से विद्यार्थी जीवन के लिए योग बहुत उपयोगी है। क्योंकि विद्यार्थी जीवन बड़ा संवेदनशील संघर्षशील होता है। योग से दिमाग सन्तुलित होता है तथा एकाग्रता बढ़ती है। वा किसी भी कार्य को सोचने विचारने तथा कार्य करने की क्षमता बढ़ती है। मैंने इस योग शिविर में क्रोध, मोह, लोभ आदि विकारों को दूर करने का प्रण किया है। शिव बाबा मुझे शक्ति देंगे।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा, दिल्ली-३२ से छपवाया, Regd. No 10563/65-D, (E)—70